शब्द यात्रा पर है

(गीतो एव गजलो का काव्य सग्रह)

मुकुट सक्सेना



हसा प्रकाशन
जयपुर



राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर
के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित

ISBN	81–86120–52–1
सर्वाधिकार	लेखकाधीन
सस्करण	1998
मूल्य	80 00
प्रकाशन	हसा प्रकाशन 57 नाटानी भवन मिश्र राजा जी का रास्ता
टाईपसैटिंग	गणपति ग्राफिक्स जयपुर फोन –311541
मुद्रक	सिहसन आफसेट जयपुर

समर्पण

अजाने निष्ठावान
रचनाधर्मियों
के प्रति

इतना ही कहना है

यश और प्रशसा प्राप्त करन की मानवीय दुर्बलता के बावजूद सग्रह प्रकाशन की भीड मे सम्मिलित हाने की उत्कण्ठा सम्भवत इसलिए नहीं रही कि रचनाधर्मिता को तपस्या जान निजत्व से जोडे रहा परिणामस्वरुप तमाम उम्र सृजनरत रहते हुए अभी तक कोई काव्य सग्रह प्रकाश म न आ सका मित्रो की यदा कदा की टोकाटाकी और कई सग्रहा की सामग्री सृजित होने के बावजूद भी। इस दृष्टि से इस सग्रह के प्रकाशन का अगर किसी को श्रेय जाता है तो व हैं डा वीरेन्द्र सिह जो विगत कुछ वर्षो से मुझे निरन्तर कुचेरते रहे नश्वरता के सत्य से परे सासारिकता और समाज के प्रति सृजन की उपादेयता को रेखाकित कर मुझे समझाते रहे कि मेरा यह हक नहीं है कि जो समाज तक पहुचना चाहिये उसे मैं अपनी सनक के वशीभूत वैसा न होने दू। आखिर तग आकर मुझे उन के समक्ष समर्पित होना पडा जिस का प्रतिफल है शब्द यात्रा पर हैं" काव्य सग्रह का प्रकाशन। अब भीड के रेले म यह भी शरीक है देखते हैं किस किस की दृष्टि इस पर जाती है ? जो देख सकेगे मै उन का कृतज्ञ रहूगा और डा वीरेन्द्रसिह के साथ श्री तारादत्त निर्विरोध हसा प्रकाशन की श्रीमती पुष्पादेवी नाटाणी एव राजस्थान साहित्य अकादमी उदयपुर का भी।

वसन्त पचमी
1 2 1998

मुकुट सक्सेना

मर्म और सोच को आदोलित करती रचनाए

सम कालीन कविता के परिदश्य को ध्यान मे रखकर एक बात नितात स्पष्ट हो गयी है कि गीत और गजल कविता की दो ऐसी विधाए हैं जो वाह्य तथा आतरिक यथार्थ के स्तरो को अपेक्षाकृत सवदेना की 'सघन सरचनाओं के द्वारा अर्थ' देने मे अपने तरीके से गतिशील हैं। मेरे विचार से गीत हो या गजल उन्हे कविता ही कहना उचित है जबकि गीत का इतिहास यह बताता है कि नवगीत को कविता से अलग करने का षडयत्र भी नाकाम रहा तथा छदबद्ध कविता के प्रति जो एक वितृष्णा का भाव सन् 50 से पूर्व था वह 1960 के बाद कमश कम होते हुए आज इस स्थिति मे आ गया है कि आलोचको तथा पाठको ने गीत के नए तेवर के तथा साथ ही गजल की नयी उठान को प्रासगिक मानते हुए उन्हें वह स्थान देने का प्रयत्न किया है जो हिंदी की भाषिक सरचना के न्यूनाधिक अनुकूल हो। इसी सदर्भ मे एक बात और वह यह कि चाहे छदबद्ध कविता हो या मुक्तछद दोनो के लिए आवश्यक है छद का ज्ञान और छद का प्राण है लय जो मुक्तछद तथा छदबद्ध दोनों के लिए जरुरी है। मुक्तछद भी एक छद है जो अर्थ की लय को समक्ष रखता है। (जबकि यह भी सत्य है कि मुक्तछद के साथ काफी व्यभिचार भी हुआ)। दूसरी ओर गीत तथा गजल की सरचना मे अर्थ की लय का जो सघन रुप प्राप्त होता है तथा समय की आवश्यकता के अनुसार पारम्पिरिक प्रतिमानों को कभी कभी तोडने का जो कम प्राप्त होता है वह विचार सवेदन के नए रुपो की माग का ही प्रतिफलन है।

उपर्युक्त पृष्ठभूमि को मैंने यहाँ इसलिए दिया है कि इसके प्रकाश मे हम श्री मुकुट सक्सेना के प्रथम कविता सग्रह (गीत व गजल सग्रह) 'शब्द यात्रा पर हैं' का विवेचित एव मूल्याकित कर सकते हैं क्योकि मुकुट जी का यह पहला सग्रह गीत और ग़जल के उन क्षितिजो की ओर ले जाता है जो कवि की सृजन सभावनाओ को ही सकेतित नहीं करता है वरन् कवि के सोच सवेदन को हमारे सामने रखता है। एक ओर एजी कार्यालय का असाहित्यिक वातावरण दूसरी ओर अधिकतर लेखक के साथ जुड़ा परिवार का दायित्व तथा सघर्ष तथा तीसरी ओर इनके बीच कभी टटता तो कभी जुडता कवि कर्म अत में सश्लेष की उस स्थिति में आता है जिसका साकार रुप है यह कविता सग्रह।

मुकुट जी सोच सवेदन के कवि हैं जो यथार्थ के भिन्न रुपो को इस प्रकार सवेदति करते हैं जो हमारे मर्म को छूने के साथ परोक्षत हमारे सोच को भी आदोलित करते हैं। यह स्थिति हमें उनके गीतों तथा गजलो दोनों में न्यूनाधिक रुप से प्राप्त होती है। इसी के साथ यह भी दृष्टव्य है कि मुकुट जी राजनीति शोषण विसगति भौतिकता काल बोध जीवन सघर्ष की भिन्न स्थितिया 'शब्द भाषा चिन्तन प्रेम प्रकृति परिवार' के रुपाकार तथा मनोवैज्ञानिक स्थितियों को इन दोनों सरचनाओं (गीत और ग़जल) 1 अर्थ देने का प्रयत्न करते हैं और शब्द इस अर्थ देने की प्रकिया में एक यात्रा का रुप ग्रहण करते हैं क्योंकि रचनाकार के पास ये शब्द या रुपाकार ही तो हैं जिनके द्वारा वह यथार्थ

के रुपो को सवेदित करता है। इस अभिव्यक्ति मे शब्द की सार्थकता हो और उन्हें छलनाओ से दूर रखा जाए तभी तो कवि का यह कथन सृजन और सोच दोनों का महत्व देता है।

शब्द यात्रा पर हैं गॉव गॉव जाएँगे
भीड़ो से गुजरेंगे बीहड़ भी पाएँगे
मजिल पा जाने तक
ओ मेरी सहिष्णुता देखना इन्हे कहीं छलें नहीं छलनाए ?
(शब्द यात्रा पर है)

यही नहीं कवि इन शब्दो से अपनी अस्मिता का जोडता है और स्वय शब्दों के साथ वह भी एक यात्रा पर है—एक गजल का शेर लें—

मेरे नाम कहॉ पाओगे कोई मील का पत्थर
मुझमे मजिल ढूँढने वालो मैं तो एक सफर हूँ।

कवि यह भी मानता है कि "शब्दो का सामर्थ्य न पूछो/जग निरतर ही जारी है। जो शब्द के सघर्ष रुप को व्यजित करता है। यदि और गहराई से देखा जाए तो ये शब्द या प्रतीक वे माध्यम हैं जिनके द्वारा मानव विचार या चितन करता है तभी विचारो का आवश्यक कार्य प्रतीकीकरण है। यह चितन सिद्धाता (सप्रत्ययों) के वेश को बदल देता है और यह प्रकिया चितन के गतिशील रुप को सकेतित करती है (बदल दो सिद्धातो के वेश/कि चितन नए नए) परतु दूसरी ओर आज की बाजार सस्कति तथा अत्यधिक भौतिकता के कारण हमारे चितन का क्या हश्र हो रहा है इसे कवि एक व्यापक सदर्भ मे लेता हुआ दिखाई देता है—

जाने क्या हो गया हमारे जीवन दर्शन को
पूरे के पूरे चितन को कुर्सी लील गयी।

मुकुट जी की रचनाशीलता मे शब्द और चितन के प्रति जो सोच सवेदन का रुप प्राप्त होता है वही रुप कमोवेश रुप से हमें अन्य यथार्थ के क्षत्रो मे भी प्राप्त होता है। जिन यथार्थ रुपो का सकत मैने ऊपर किया है सभी को यहॉ नहीं लिया जा सकता है उनमें से मैं कालबोध तर्क—विवेक सदर्भ तथा राजनैतिक सदर्भ को लेना चाहूँगा जो समग्रत कवि के सोच सवेदन को व्यक्त करता है जिनका सबध जीवन सघर्ष तथा सवेदना दोनों से है।

कवि का काल बोध परोक्षत चक्रीय है पर जीवन कम के सदर्भ मे वह रेखीय या गतिशील है। यदि गहराई से देखा जाय तो कवि काल खण्डो को वर्तमान की सापेक्षता मे लेता है और यही कारण है कि कवि वर्तमान की स्थितियो तथा विसगतिओ को लेते हुए भी काल के गतिशील रुप को अर्थ देता है। काल बोध भूत वर्तमान और भविष्य का एक निरन्तर क्रम है लेकिन यह वर्तमान ही है जो पश्चगामी होकर अतीत होता है और अग्रगामी होकर भविष्य। कवि का कथन है—

जीत गया वर्तमान जीत गया
टुकड़ो में बिखर कर अतीत गया

यह अतीत का टुकडो मे जाना वर्तमान या प्रतीति–क्षण का पश्चगामी रुप है और इस तरह वर्तमान का प्रतीति बिन्दू वह काल खण्ड है जो सदैव रहता है और इस प्रकार वह सदा गति मे रहता है (जीत जाना) यही कारण है कि स्टेस ने अपनी महत्वपूर्ण पुस्तक टाइम एण्ड इटर्निटी (Time and Eternity) मे काल के वर्तमान प्रतीति बिंदु को अनत–अब" (Infinite now) कहा है जिस पर पैर जमाकर रचनाकार और विचारक अतीत और भविष्य को कमश प्रासगिक और अनुमान्ति करता है। अतीत और आगत का द्वन्द्व मानवीय चेतना को गति देता है लेकिन कवि मात्र 'पुरखो की बातो' को दुहराने (अतीत) के पक्ष मे नहीं है वरन आगामी पीढी को मनुष्य क्या दे पाता है उस पर निर्भर करता है कि वह काल–बोध को कितना समय सका है। एक गीत की पक्तियॉ ल–

पुरखो की बातो को ही दुहराओगे
आगामी पीढी को तुम क्या दे पाओगे
भू पर नभ लाने के खेल रचा
अनहोनी करने को है यौवन

(भू पर नभ)

काल एक गति है–शक्ति है जो जीवन के रग बदलने मे व्याप्त है क्योकि यह काल का चक्राकार रुप ही है जो मानव जीवन के चक्र का अर्थ देता है और यही स्थिति ऋतुओं के कम में भी है। कवि का एक शेर है–

बचपन मे खेल ख्वाब जवानी मे फिर भजन
बदले हैं बार बार यहाँ जिन्दगी के रग

यहाँ बार बार शब्द चक्राकार स्थिति का सूचक है। ये उदाहरण यह भी सकेतित करते हैं कि रचनाकार काल को अनुभव बिम्बो के द्वारा पकडने की कोशिश करता है।

मुकुट जी की रचनाशीलता मे तर्क और विवक के अतर को भी परोक्ष रुप से व्यक्त किया गया है। प्रसाद जी ने इडा (बुद्धि) के प्रतीकत्व को 'उलझी अलकें ज्यो तर्कजाल के द्वारा तर्क के रुप को समक्ष रखा है लेकिन मुकुट जी ने 'मकडियों' के बिम्ब के द्वारा तर्कजाल का जो चित्र खडा किया है वह 'तर्क के अति' का रुप है

जाल कितने ही बुनें लेकिन हमे मालूम है
अपने जालो में उलझ कर मकड़िया मर जायेगी।

बुद्धि का धर्म है तर्क करना लेकिन यह तर्क विवेकपूर्ण होना चाहिए तभी तर्क का सकारात्मक पक्ष सामने आता है। यदि हम मुकुट जी की रचनाओ को लें तो हम पाते हैं कि उनकी कल्पना एव सवेदना अति का स्पर्श नहीं करती हैं जो उनकी विवेक दृष्टि का ही फल है कि कवि जो भी बिम्ब प्रतीक लेता है उन्हे मात्र काल्पानिक धरातल पर ही प्रतिष्ठित नहीं करता है वरन उन्हे एक वस्तुगत आधार भी देता है। यही कारण है कि कवि की वैयक्तिक आशायों की रचनाए नितात व्यक्तिगत नहीं हैं वे कमोवेश रुप से व्यापक सदर्भो को अपने अदर समेटती हैं। यह विवेक की ही प्रकिया है जो वस्तुओ घटनाओं तथा प्रकमों को वस्तुगत सापेक्षता से सबधित कर उसे व्यापक मानवीय

सरोकारो से जोड़ती है। कुछ उदाहरण लें–

1 वैयक्तिक बेटी का रुपोतरण

जब से बटी ने मेरी आँखा को चूमा एक बार
तब से हर लडकी मुझे बेटी नजर आने लगी।

अथवा

बेटियो को बेवजह ही रात दिन मत कोसिये
जिदगी मिट जाएगी गर बेटिया मर जाएगी

कवि के रचना ससार मे ये पारिवारिक बिम्ब अक्सर आते हैं जो आज की कविता मे भी भिन्न सदर्भो म आ रह हैं।

2 भोलेपन का एक सवेदनात्मक पक्ष

जब कोई भोलापन जीवन बन आता है
ऐसे में बरबस ही बार बार आती है।
बचपन की याद (मोहन की याद)

3 दर्द का सामाजिक पक्ष

चलना है साथ साथ तो तारों के साथ चल
हमदर्द है तो वक्त के मारो के साथ चल

4 भूख का व्यापक सदर्भ

भूखे बच्चो से पूछिए जाकर
कितनी सौंधी है भात की खुशबू।

इन उदाहरणो से यह स्पष्ट है कि कवि की सवेदना हमारे मर्म को छूने के साथ यथार्थ बोध के भिन्न स्तरो को 'सोच के धरातल पर भी व्यक्त करती है। इस सवेदना का यथार्थ से रिश्ता होने के कारण कवि राजनीति धर्म समाज तथा व्यक्ति की विसगितयों विडम्बनाओ तथा अधविश्वासो का सवेदित करता है जिनमें आक्रोश का एक ठडा रुप ही मिलता है जो विक्षोम से उत्पन्न कवि की मनोदशा है पर उस रुप मे आकामक नहीं जो हमे समकालीन कविता मे प्राप्त होता है। मुक्त छन्द की सरचना दीर्घ होने से वहा उसकी अधिक गुजायश होती है जबकि गीत या गजल से वह विस्तार समव नहीं है। कहने का मतलब यह कि सक्षिप्त तथा दीर्घ सरचना की अपनी मागे होती हैं लेकिन समकालीन कविता के व्यापक परिदृश्य में इन दोनों प्रकार की सरचनाओं के कई कथ्य समान होने से यह स्पष्ट होता है कि आज का कवि चाहे वह किसी भी काव्य विधा मे लिख रहा हो वह आज की त्रासद एव सवेदनीय स्थितियों से लगातार टकरा रहा है। यही बात मुकुट जी के बारे मे भी सत्य है। कवि का उन स्थितियो से टकराने के पीछे परिवर्तन की आकाक्षा छिपी रहती है क्योंकि रचनाकार जब इन नकारात्मक शक्तियो तथा स्थितियो को अर्थ देता है तो वह उन्हें बदलना चाहता है। राजनीति की आज जो स्थिति है उसके प्रति कवि का साकेतिक कथन है–

रखी हुई हैं रिस्टवॉच में बारुदी शकाए

ठाणी ठाणी बनी हुई हैं रावण की लकाए
राजनीति चौराहे पर हतप्रभ सी खड़ी हुई है
आज अहिंसा के कधो चढ़ हिंसा बढ़ी हुई है (बिम्ब हमारे)

आज राजनीति तथा समाज में आतक हिसा अपराध तथा अवसरवाद का जो मूल्यहीन ताड़व है वह साकेतिक रुप से उपर्युक्त पक्तियो में "सघनीभूत" हो गया है। एक शेर में कवि सर्वग्रासी शोषण प्रकिया को पर जीवी बेल (पैरासाइट) के द्वारा व्यक्त करता है

एक ऐसी बेल भी फैली हुई है बाग में
खून पी जाती है जो पेडो पे छा जाने के बाद।

इस विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि ग़ज़ल अपने दरबारी रुप तथा प्रेम--माशूका के दलदल से बाहर निकल कर अन्य मानवीय सरोकारों को भी समेटने मे समर्थ है। यह तथ्य मुकुट जी (तथा अन्य गजलकार जैसे वशिष्ट अनूप सूर्यभान गुप्ता जहीर कुरेशी आदि) तथा उनके समानधर्मी गजलकार की रचनाओ से स्पष्ट होता है। अत इधर हिंदी की प्रकृति तथा सरचना की दृष्टि से जो ग़ज़ल के रुप विधान तथा कथ्य मे परिवर्तन आया है वह मेरी दृष्टि से हिंदी गजल के रुप को प्रतिष्ठित करता है।यहाँ यह कहना उचित होगा कि गजल के शास्त्रीय या पारम्परिक रुप का निर्वाह हिंदी की प्रकति तथा नए कथ्य के प्रकाश मे यदि होता है तो ठीक है नहीं तो उसे भाव या विचार की आवश्यकता के अनुसार तोड़ा भी जा सकता है। मेरी दृष्टि से अर्थ लय की दृष्टि से ही इसे माना या न माना जाना अपेक्षित है। गजल का यह लोकातत्ववादी रुप आज की एक प्रमुख विशेषता है।

गीत और गजल दोनों को आत्माभिव्यक्ति का माध्यम माना गया था पर अब ये दोनो माध्यम आत्मपरकता और वस्तुपरकता के द्वन्द्व को सकेतित करते हैं। इन दोनो विधाओं मे एक ऐतिहासिक अतर है वह है गजल का मूलस्रोत सामतीय रहा है जबकि गीत का जन्म वर्गहीन आदिम समाज में मनुष्यो के सामूहिक श्रम से उत्पन्न सवेग के रुप मे हुआ। यही कारण है कि गजल की व्याप्ति मध्यवर्गीय तथा उच्चवर्गीय समाज मे अधिक रही जब कि गीत की व्याप्ति बहुसख्यक श्रम जीवी समाज मे ज्यादा रही। यदि गहराई से देखा जाए तो गजल की 'लय योजना' गीत की अपेक्षा कम वैविध्यपूर्ण चक्रीय गतिशील (द्रुत विलम्बित) तथा समूहवाची है ऐसा सरचना के कारण है। मुकुट जी तथा अन्य गजलकारो तथा गीतकारों की 'लय दृष्टि' के इस अतर को कमोवेश रुप से समझा जा सकता है।

मुकुट जी ने एक नया आयाम गजल को इस रुप मे दिया है-कि उन्होने हरेक गजल का शीर्षक दिया है। रुढ़ि यह रही है कि गजल का हर शेर अपने मे पूर्ण होता है तथा दूसरे से निरपेक्ष भी पर मुकुट जी ने गजल के जो शीर्षक दिए है कहीं कही उनके दो या तीन शेर अक्सर एक ही भाव विचार को अभिव्यक्ति देते हैं। इस दृष्टि से मुकुट जी ने इस रुढ़ि को तोडा है और एक गतिशील परम्परा का आरम्भ किया है।

एक बात और। कवि की सृजनात्मकता मे वैचारिकता के डाइल्यूशन की अभी और

आवश्यकता है क्योंकि मैंने उनके गीतो तथा गजलों मे इस वैचाकरिकता को "फड़फड़ाते" हुए देखा है अभी उसे और अधिक आदोलित करने की आवश्यकता है। इस दृष्टि से उनके कुछ गीत मुझे अधिक प्रभावी लगे जैसे "एक आँख देख रही भीतर" "शब्द यात्रा पर हैं" "बिम्ब हमारे" "जीवन तलाश "शीत युद्ध" तथा "चितन नए नए"। उन के गीतों और गजलों से गुजरते हुए मुझे कुछ नए रुपाकार भी मिले जैसे–

1 दिशा दिशा भटक रहे हैं लेकिन कुतबनुमा हाथ में सभाले हैं।

2 ढेर लगा धाना का साख्यकीय पुस्तक मे।

3 अतरिक्ष कॉलर में टॉकती बटन।

4 प्लास्टीकी शक्लो को लेकर हैं घूम रहे। आदि

इन प्रयोगो से लगता है कि कवि के पास ऐसे नए शब्दों या रुपाकारों को प्रयुक्त करने की क्षमता है और मुझे विश्वास है कि अन्य अनुशासनो के अध्ययन से ऐसे नए प्रयोग रचनात्मक अर्थवत्ता प्राप्त कर सकते है। समग्र रुप से मुकुट जी के रचना ससार से गुजरते हुए मुझे गीत व गजल मे एक अपनी तरह की ताजगी लगी जो पाठक के सवेदना–तन्त्र को किसी न किसी स्तर पर झकझोरती है– सवेदित करती है। यह सवदना अभी और व्यापक तथा बहुआयामी होगी इस आशा के साथ मैं इस सग्रह का साहित्य के क्षेत्र में स्वागत करता हू। अन्त मे मुकुट जी के एक शेर से मैं इस चर्चा को विराम देता हू जो विज्ञान युग का आवाहन भी है और हमारे सोदन को चुनौती भी–

तुम झगडते ही रहे बेवजह गत इतिहास पर
हमन कल के वास्त विज्ञान की बाते करीं।

महापडित राहुल ने विज्ञान को "विवेकशील चितन" कहा है जो विज्ञान युग को समझने का एक सशक्त माध्यम है और मुकुट जी भविष्य मे इसे और सार्थकता देगे इस आशा के साथ मैं अपनी वैचारिकता को विराम देता हू।

जयपुर वीरेन्द्र सिह

5 फरवरी 1998

अन्तर्साक्ष्य

"शब्द यात्रा पर हैं" काव्य संग्रह मे मुकुट सक्सेना के इकतालीस गीत और चालीस गजलें संग्रहीत हैं। जुड़वाँ भौहें कथा कृति के बाद यह उनकी दूसरी और महत्वपूर्ण काव्य कृति है। विगत चार दशकों में सृजित उनकी काव्य रचनाओं में से चयनित इक्यासी रचनाओं की यह प्रस्तुति एक कवि की सृजन-यात्रा से परिचित कराने म यद्यपि काफी नहीं है तथापि इन्हें पढ़कर एक कवि की विलक्षण काव्य प्रतिभा का कायल हुआ जा सकता है। मुकुट सक्सेना हिंदी के ऐसे समर्थ साहित्यकार हैं जिनके लिए अब बहुत कुछ कहा जा सकता है 'बहुत कुछ' से मेरा तात्पर्य है वह सब जो एक जन्मजात प्रतिभा स्तरीय लेखक और कुशल रचनाधर्मी के साथ जुड़ा होता है।

'मुकुट सक्सेना कवि-गीतकार हैं गजलगो और कथाकार भी। किंतु प्राथमिकता के अनुक्रमण में पहले वे गीतकार हैं फिर गजलकार कवि और बाद में कथाकार। यह समय की बात है कि उनकी आदिकृति कथाओं की रही और एक लम्बे अन्तराल के बाद उनकी काव्य कृति सामने आई है। कारण कि वे एक निष्ठावान साहित्यकार हैं मौन साधक और उनके कवि ने चिंतन से अभिव्यक्ति तक की सृजन यात्रा में जैसा जो अनुभूत किया उसे ज्यों का त्यों व्यक्त कर दिया है। उनका विश्वास साहित्य के सृजन मे अधिक रहा प्रचार में कम अन्यथा उनकी कृतियों की एक बड़ी संख्या भी हो सकती थी।

शब्द यात्रा पर हैं का पूर्वार्द्ध गीतमय है तो उत्तरार्द्ध गजलों के साथ। गीत और ग़ज़ल दोनों काव्य की सशक्त विधाएं हैं और उनकी अपनी अपनी परंपरा है उनका अपना इतिहास और विकास है। मुकुट सक्सेना ने इन दोनो विधाओं मे साधिकार लेखन किया है और उनका लेखन किसी बनावट का नहीं बुनावट का मूक साक्षी है।

गीति काव्य की एक सुदीर्घ परम्परा है। उसका उल्लेख नाट्य शास्त्र और अमर कोश' में किया गया है। हिन्दी में गीति काव्य शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम लोचन प्रसाद पाण्डेय ने कविता कुसुम माला (प्रथम संस्करण जून सन् 1909 ई) की भूमिका मे किया था। वैसे गीति काव्य पश्चिम के लिरिक का अभिधान है । वहाँ पर यह शब्द अर्थ विकास की एक लम्बी प्रक्रिया से निकल कर वर्तमान रुप प्राप्त कर सका है। गीत और गीति काव्य को वर्गीकृत करने के उपरान्त भी गीत गीति काव्य रहा और गीतिकाव्य गीत बना रहा। प्रारंभ में गीतों में शास्त्रीय संगीत की प्रधानता थी परन्तु कालान्तर मे कवि ने अनुभव किया कि उसकी रचनाओं को वाद्य यंत्रों की आवश्यकता नहीं है क्योकि उसके शब्दो मे संगीत तत्व विद्यमान है। इसलिए कवि का 'स्व' अधिकाधिक स्वीय रुप में अभिव्यक्त होने लगा।कवि गीतों में अपने व्यक्तित्व का प्रक्षेपण कर अपनी अनुभूतियो और भावनाओं को निजत्व के अनुरुप रुपायित करता रहा। गीत मे वह निर्बाध और प्रत्यक्ष व्यक्तित्व को अभिव्यक्ति देता है अत उस मे प्रत्यक्ष और उच्छ्वासित स्व तरंग को वाणी देने मे सफल होता है। गीत म सहज तरलता अबाध मुक्तता और प्रत्यक्षानुभूति का स्वर मुखरित होता है। वैयक्तिकता गीत काव्य की प्रमुख कसौटी है। अबाध कल्पना असीम भावुकता विशुद्ध भावात्मकता कर्म कोलाहल से मुक्त विचारधारा अथवा निष्कर्षोपलब्धि के भार से मुक्त

भावधारा के प्रकृत विषय हैं। गीत में सिद्धान्तीकरण का अवकाश नहीं है। विचार को भी गीत में भावात्मक माध्यम गृहण करना पड़ता है। संक्षिप्तता गीत काव्य का प्राण है। कवि की वैयक्तक भावधारा और अनुभूति के अनुरुप लयात्मक अभिव्यक्ति देने के विधान को गीति काव्य कहा जा सकता है। अन्य काव्य रुपों में गीति काव्य जिस लक्षण के आधार पर पृथक पहचाना जा सकता है वह है उसका आन्तरिक प्रगतिगत लक्षण उसका अन्तर्मुखी दृष्टिकोण। गीतकार की दृष्टि वैयक्तिक और आत्मनिष्ठ होती है किंतु वह गीत के साथ व्यापक हो जाती है। गीति काव्य कवि की निजी भावनाओं का प्रकाश होता है। सहज शुद्ध भाव स्वचछद कल्पना तर्कवाद और न्याय मूलकता से मुक्त विचार ही गीति काव्य की वास्तविक विशेषताए हैं और भारतीय नाटय शास्त्र के अनुसार रसानुभूति का अजस्त्र स्रोत गीत ही है। गीतिकाव्य या गीत मे रसधारा का प्रवाहित होना इस बात का प्रतीक है कि वह हृदय के किसी मार्मिक स्थल से फूट निकला है। गीत व्यक्ति के अन्तस्तल से निकली कोई ध्वनि है जो विस्तारित होकर विषयगत परिसीमाओं तक रहती है। वस्तुत गीत मन को छूने वाली सरस प्रस्तुति है। स्तुति भी कोई प्रगीत है छद-भाव भाषा की सहज प्रतीति भी। काव्य मे नवल स्वर हो गयता सुख-दुखो की सूक्ष्मता और गहन पीडा तथा सघन पीडा की अनुभूति वही गीत है। लयात्मकता एव गीतात्मकता उसे काव्य में सर्वोच्चता प्रदान करती है और जब गीत सगीतमय होकर दिग्दिगन्त मे परिव्याप्त हो जाता है तब अपनी दीर्घ अनुगूज छोडता है। मुकुट सक्सेना के गीत इस दृष्टि से न केवल सार्थक हैं विचार की अपेक्षा भी रखते हैं।

हिंदी साहित्य मे विद्यापति के बाद के एक लबे अन्तराल से हिन्दी की परवर्ती एव पूर्ववर्ती पीढी के गीतकारो ने जिस काव्य रचना को गीत की सज्ञा दी वह श्रृगारपरक होने के साथ रुमानी और आन्तरिक सबधो तक रहा। रहस्यवाद छायावाद हालावाद और प्रगतिवाद तक आते आते उसके पास कहने को विशेष कुछ नहीं रह गया तो नये नये परिवेश के साथ गीत के नाम भी बदलते रहे। निराला सुमित्रानन्दन पत महादेवी वर्मा पडित नरेन्द्र शर्मा हरिवशराय बच्चन नीरज जानकीबल्लभ शास्त्री रामावतार त्यागी रमानाथ अवस्थी वीरेन्द्र मिश्र मुकुट बिहारी सरोज शम्भूनाथ सिह रामानन्द दोषी बलवीर सिह रग रामनाथ कमलाकर ज्ञान मारिल्ल डॉ मनोहर प्रभाकर घनश्याम शलभ डॉ मदनगोपाल शर्मा डॉ ताराप्रकाश जोशी डॉ हरिराम अचार्य और चन्द्रकुमार सुकुमार तक अनेक कवियो ने छदबद्ध गीत शैली में गीत लिखे। यह वह समय था जब हिंदी गीतकारो ने प्रचलित गीतों की शब्द-शैली मे परिवर्तन करना पसद किया था। यहीं से गीतकार दो भागो मे विभक्त किए गए थे-अन्तर्मुखी गीतकार और बहिर्मुखी गीतकार। अन्तर्मुखी गीतकारो के विषय आन्तरिक आभास पीडा से टूटन एव बिखराव की स्थितियो मे जन्में अभाव थे तो बहिर्मुखी गीतो मे प्रेम प्रसग आलिगन मिलन रुदन बिछोह प्रतीक्षा जैसे मानवीय सबध उभर कर सामने आ रहे थे। इन गीतो ने जनमानस को कहीं गहरे

तक प्रभावित किया और काव्य मचों तथा पत्र पत्रिकाओं में भी उनकी गहरी पेठ रही किंतु शिल्प काव्य भाव सयोजना शब्द प्रयोग बिम्ब विधान और प्रभान्विति इन सभी दृष्टियों से वे गीत सम्पन्न नहीं थे । ऐसी स्थितियों में गीतों के विषय भी बदले और वे नवगीत प्रगीति नया गीत तथा अगीत जैसे नामों से लिखे जाने लगे। यहीं से गीतों में नये नये प्रतीक नयी सज्ञाए और नये बिम्ब विधानों का प्रचलन बढ चला।

साहित्य की विभिन्न विधाओं में गीत विधा नया स्वरुप धारण करने के साथ समय की धुधली आकृतियाँ उजालने में भी सक्षम रही। गीत का प्रभाव अन्तर्मन तक रहा और अपने स्वरुप शिल्प भाषा भाव तथा शब्द सभी स्तरो पर वह अपनी अनुगूज बनाए रहा मन की खाली जगह पर नाम उकेरता रहा। उसकी रागात्मकता एव गीतात्मकता ने उसे सगीत से जोड़ा वहीं शब्दों की लयात्मकता को भी स्थायित्व दिया।

इस परिप्रेक्ष्य में कहना चाहूँगा मुकुट सक्सेना के गीत आज क गीत है जो आध ुनिक भाषा एव राग बोध के कारण पूर्व प्रचलित गीतों से भिन्न हैं लीक से हटकर हैं और कल के गीत से ज्यादा सुवासित हैं। उनके गीतो मे आन्तरिक सवेगों और बाह्यजगत के आघानों की यथार्थ के निकट परिवेश में होने वाली विवेकात्मक अभिव्यक्ति को महत्व दिया गया है। उनके गीतो की मौलिकता अप्रस्तुतों प्रतीकों एव बिम्बों के सयोजन द्वारा उसके शिल्प मे किए गए परिवर्तनो से पहचानी जा सकती है। मुकुट सक्सेना हिदी गीत की नई पीढी के शीर्षस्थ गीतकारों में प्रमुख हैं और उन्होने नये गीत की विधा को समर्पित होते हुए गीतों का सृजन किया है उसे स्तर के साथ पूर्णता दी है। जीवन का एक धरातल ऐसा भी है जहाँ व्यक्तित्व एव कृतित्व दोनों मौन हो जाते हैं तब मुकुट सक्सेना लिखते हैं– 'कौन चितन मे फसे जब वक्त है विज्ञापनों का आज पानी बहुत नकली हो गया है दरपनों का' ।

मुकुट सक्सेना का गीतकार खुले आकाश में उड़ने वाला एक ऐसा पक्षी है जिसे धरती आकाश से छोटी नजर नहीं आती और उसे सतरो के ओर छोर मापने मे सुख मिलता है किंतु जैसे जैसे वह धरती के पास और पास आता है उसे धरती बद दिखाई देती है जिसमें कई कई आकाश कैद हैं। ऐसी स्थिति मे उसका मन छटपटाता है और यही क्षण है जब कोई गीत जन्म लेता है। उसे लगता है आज की असगतियो और विरोध ाभासो की कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए न लोकतत्र को सुरक्षित रखा जा सकता है और न ही आदमी के 'पन को और इस सब को लिखने की कसक ही उसके गीतकार की रचना प्रकिया है। वह लिखता है– 'सभ्यता कॉफी घरों मे निर्वसन हो नाचती है शिष्टता अश्लील से अश्लील पुस्तक बाचती है। या दिन भर ही बनी रहीं गति विधिया बाजों की गिद्धों को खोज रही कुछ ताजी लाशो की ।

मुकुट सक्सेना ने ऐसे गीत भी लिखे हैं जिनको प्रशसा की नहीं समझ और दृष्टि की आवश्यकता है उन के गीतों मे गीत के वे मूल्यवान तत्व हैं जिन के बिना गीत का कोई अस्तित्व नहीं और जहा काव्य से अलकारिता घटी है अभिव्यजना के अभिनव द्वार खुले हैं। प्रेरकता और प्रेषणीयता की दृष्टि से उनके गीत बडे वजनी हैं। उनका गीत अनायास

कागज पर खिच गई लकीरो को तुमने क्या एक नया अर्थ दे दिया आलोचकों के लिए एक चुनौती है युगीन साकेत भी।

कहना चाहूँगा मुकुट सक्सेना सकोचवश आदतों से छोटे और गुणों से बड़े व्यक्ति रहे हैं। यदि व आदतो से भी बड़े होते तो उन का सम्पर्क क्षेत्र काफी व्यापक होता उन के गीत घर द्वार तक पहुँचते और सर्वत्र पहचाने जाते किंतु गुणो से बड़े होने के कारण वे विरल व्यक्तित्व तो बना सके अपने होने की स्थिति को गध की तरह दूर पास तक नहीं फैला सके। उन्होने असमय की आहोनी देखी तो कहे बिना नहीं रह सके–

पारिजात बोए तो जल भी देना होगा
ऋतुओ के परिवर्तन को भी सहना होगा
बीज वृक्ष बनने तक ओ मेरे वात्सल्य–
देखना इन्हे कहीं ताप नहीं झुलसाए।

उसके गीतकार ने दरकने से टूट–बिखरने तक की नियति को देखा महसूसा और लिखा है–

शून्य में विलीन हुआ सिगरेटी धुम्र
थोथापन निगल गया कचन सी उम्र
तख्ती से नाम की उखड गये अक्षर।

'शब्द यात्रा पर हैं' क दूसरे भाग मे मुकुट सक्सेना की गजलें हैं जिनके प्रत्येक शेर मे बात कहने की विवशता परिलक्षित होती है। हिंदी गजल के सम्बन्ध मे वे चाहते हैं हिंदी गजल हिन्दी गजल ही हो उसमें उर्दू गजल के सस्कार की छाया न हो।

दर असल मुकुट सक्सेना का कहना है कि फारसी अरबी की रुपात्मक काव्य विधा गजल के समानातर हिंदी मे लिखी जाने वाली गजल भारतीयता युगीन सचेतना भारतीय सस्कृति और अन्तरग की सशक्त काव्य प्रस्तुति है। यद्यपि ऐसा कोई दावा नहीं है कि उस म उर्दू गजलो से अधिक काव्यगत ऊँचाइयाँ हैं परिष्कृति है या नये निर्माण जैसी कोई बात तथापि एक जमीन और एक पगडडी पर चलकर भी दोनो की दिशाएँ भिन्न हैं। दोनो अपने पाँवो से चलना जानती हैं। अन्तर इतना ही है कि उर्दू गजल में रुमानियत है साफ बयानी और अन्दाजे बया तथा जिदगी की कशमकश है जबकि हिंदी गजल एक सस्कृति की और शख्सियत की पहचान है उसकी उपस्थिति का अहसास और जीये हुए क्षणो की अभिव्यक्ति। उर्दू गजल मे आम आदमी के हादसों और हालात की तल्खिया हैं नारी क निरपवाद सौंदर्य की पराकाष्ठा है रग–रुप राग रस का व्यक्तिकरण और सरलीकरण है तो हिंदी गजल मे कहने का नयापन नये प्रतीक और गतव्य की एक निरतर तलाश।

गजल का जन्म फारसी मे हुआ और उसे उर्दू कवियो ने दिशा दी। वह गालिब के साथ गली कूचो तक पहुँची सराही गई। गजल की शुरुआत खानकार और आश्रम से हुई। नवीं शताब्दी हिजरी मे गुजरात एव दक्षिण मे गजल विधा को मान्यता दी गई। यों तो गजल अरबी शब्द है और उसका शाब्दिक अर्थ है कातना–बुनना। कुछ गजलगो के

अनुसार गजल फारसी शब्द है जिसकी व्युत्पत्ति गजाला शब्द से हुई। गजाला अर्थात मृगनयनी या मृग शावक। फारसी मे गजल के लिए कहा गया है बाजनान गुफ्तगू' अर्थात औरत के साथ बातचीत आशिक माशूक (प्रेमी प्रेमीका) की बतकही। गज़ल इश्क मिजाजी इश्क हकीकी भी पीडा और सयोग की पर्देदारी भी। उर्दू गजल का रुप जो रहा हो वह लोकप्रियता के कारण दूसरी भाषाओ के द्वारो पर दस्तके देती हुई हिन्दी के चौक ऑगनो में अल्पनाए सजा चुकी है। वह फारसी के दायरो से निकल कर लश्करी ज़ुबान मे ढलकर हिन्दी और हिदीतर भाषाओ मे कही जाने लगी है। हिंदी गजल छद विचार भाव और प्रस्तुति मे उर्दू गजल से एकदम भिन्न है। उसका केनवास टेम्पराटेक्नीक की तरह बडा और इन्द्रधनुषी रगो का है। हिदी एव उर्दू गजलो की निकटता का कारण यह है कि उर्दू की बहरे हिदी के मात्रिक और वार्णिक छदो मे निहित हैं।

आज हिदी गजलो का दौर है और हिदी मे अच्छी गजलें लिखी जा रही हैं। हिदी गजलकारो की एक लबी पात है किंतु उनमें कुछेक ही हैं जो हिदी गजल हिन्दी में लिख पा रहे हैं अन्यथा अधिकाश कवि हिन्दी गजलो को उर्दू गजल की तरह लिख रहे है। वास्तविकता यह है कि हिदी मे भारतेन्दु हरिशचन्द्र जयशकर प्रसाद एव निराला ने भी हिदी गजले लिखी हैं शमशेर बहादुर बलवीरसिह रग नीरज रामनाथ कमलाकर और रामावतार त्यागी ने भी। दुष्यत कुमार त्यागी की हिदी गजले काफी लोकप्रिय रही हैं किंतु वे उर्दू गजल से भिन्न नहीं है। स्थिति यह है कि जो हिन्दी गजले लिख रहे हैं वे हिन्दी में उर्दू गजल का सस्कार परिवर्तित नहीं कर पाए हैं यही मुकुट सक्सेना का मूल चितन और चिता है। ऐसी स्थिति मे गजलो मे भारतीय सस्कार आज भी कम ही दृष्टव्य हैं जो हिदी गजल की पहचान के लिए आवश्यक है। अच्छी हिंदी गजले लिखने वालो में चन्द्रसेन विराट मुकुट सक्सेना तारादत्त निर्विरोध कुअर बेचैन जहीर कुरेशी कुमार शिव गोपाल गर्ग कुदन सिह सजल सूर्यभानु गुप्त राजेश रेडडी ज्ञान प्रकाश विवेक और सलीम खॉं फरीद आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

मुकुट सक्सेना की हिन्दी गजले भारतीय सस्कार की प्रतीक हैं और भारतीय सस्कृति के परिप्रेक्ष्य में उन्होने जो गजले कहीं हैं वे लीक से हटकर तो हैं ही मौलिकता के कारण नई सोच भी रखती हैं उनकी मानसिकता एक शेर मे यो व्यक्त है

मला इससे अधिक क्या आत्मा की दिव्यता होगी
सलीबो पर लटक जाए मनुज मतव्य बनने तक।

आज की जनतत्रीय व्यवस्थाओ पर प्रहार करते हुए उन्होंने लिखा है–

'जाने क्या हो गया हमारे जीवन दर्शन को
पूरे के पूरे चिन्तन को कुर्सी लील गई
'लोचनहीन किसी दपर्ण में
कैसे अपना बिम्ब निहारे
'मानव इतना सभ्य हो गया
जैसे पत्थर की मीनारें।

मुकुट सक्सेना की दृष्टि बडी पैनी है। दूर पास की जिदगी की बारीकियों को भी वे बखूबी पहचानते हैं–

अस्मिता की गुदडी को व्यर्थ ही रहे ढोते
जो बदल सके चोले अन्तत युगीन हो गये।
'उम्र भर बुनते रहे हैं यत्न से
एक स्वेटर है हमारी जिन्दगी।
'उत्तरदायी तो होने थे हम निज कथनी करनी के
होता है बदनाम मगर ये बेचारा बेचारा नाम।
'मेरी तृषा त्रासदी को तुम कैसे कूत सकोगे
मैं मरीचिका जननी मरु मे जन्मी रेत लहर हू।

मुकुट सक्सेना जीवन दर्शन के शायर हैं। वे गृहस्थ जीवन की मर्यादाओ पर भी शेर कह देते हैं तो मागलिक सस्कारो पर भी। उनकी दृष्टि मे कन्याओ का रुप मन के बोझ से कम नहीं होता। वे प्रसव वेदना से पीले हाथ तक की यात्राओ के दृष्टा हैं ओर उनके लिए सृजन ही सृष्टि है–

'उस के आखो नीद नहीं
शायद बिटिया स्यानी है।
बेटिया को रात दिन मत बेवजह ही कोसिये
जिन्दगी मिट जायगी यदि बेटिया मर जायगी।

मैं मुकुटजी की सृजनयात्रा का साक्षी हूँ और कह सकता हूँ, उनकी हिदी गजलों की भावभूमि में सामाजिक यर्थाथ एव विद्रूपताए हैं और वे उनकी ओर सकेत भी करते हैं–

'इस समय की धार मे कैसे बचेगी अस्मिता
छद्म की बहती नदी हम दीप दोने हो गए।
'कौन जाने कौन से है कोण की यह रोशनी
बढ़ गईं परछाइयाँ और लोग बौने हो गए।

सास्कृतिक अवमूल्यन राजनैतिक फेर बदल असगतियों व्यक्तिक्षोभ और मानव मूल्यों की सुरक्षा के सबध में भी मुकुट सक्सेना ने शेर कहे हैं–

आप दीपक तो जलाकर देखिए
काच का घर है हमारी जिदगी।
'जब से बेटी ने मेरी आँखों को चूमा एक बार
तब से हर लड़की मुझे बेटी नजर आने लगी।

और यही है हिन्दी ग़जल की पहचान।

तारादत्त निर्विरोध

अनुक्रम

शब्द यात्रा पर है

सूर्यमुखी सपने हैं
चन्द्रमुखी आशाए
देखना इन्हे कहीं ग्रहण नही लग जाए

पारिजात बोए तो जल भी देना होगा
ऋतुओ के परिवर्तन को भी सहना होगा
बीज वृक्ष बनने तक
ओ मेरे वात्सल्य
देखना इन्हे कहीं ताप नहीं झुलसाए ?

ओर छोर नापेगे क्षितिजो के पख कभी
दिशा दिशा गूजेगे जय के भी शख कभी
वह क्षणा आ जाने तक
ओ मेरी जिजीविषा
देखना इन्हें कहीं डसे नहीं कुण्ठाए ?

शब्द यात्रा पर हैं गाव गाव जायेग
भीड़ो से गुजरेगे बीहड भी पायेगे
मजिल पा जाने तक
ओ मेरी सहिष्णुता
देखना इन्हें कहीं छलें नहीं छलनाए ?

गीत की वापसी

अपने ही देश मे रखे गये विस्थापित
गीत लौट आये तुम
आओ अभिनन्दन है।

इतने दिन कहो कहा
कैसे दिन बीते थे
छद्मो की बस्ती मे
तुम कैसे जीते थे
अस्मिता सुरक्षित रख
मीत लौट आये तुम गीत लौट आये तुम
आओ अभिनन्दन है।

पूरा एक काल–खण्ड
तुम पर आक्रामक था
हलचल का वह जगल
पर कितना भ्रामक था
उन सारे वादो से
जीत लौट आये तुम गीत लौट आये तुम
आओ अभिनन्दन है।

उपेक्षित रहे थे तुम
बडबोली टोली मे
जहर ही मिला तुम को
उन सब की बोली मे
भला उन सभी का पर
चीत लौट आये तुम गीत लौट आये तुम
आओ अभिनन्दन।

सूर्यबीज बोने थे

जीवन ने प्रश्न जो उछाले हैं
सब के सब यत्न के हवाले है

रोज सुबह चुग्गे की मजबूरी
और विषम गन्तव्यो की दूरी
डैने हैं दायित्वो से भारी
थक कर भी उडने की लाचारी
दिशा दिशा भटक रहे हैं लेकिन
कुत्बनुमा हाथ मे समाले है।

अनगिनती चिन्ताए घेरे हैं
लपटो के बीच मे बसेरे हैं
जगह जगह डसा है अभावो ने
तोड दिया समय के तनावो ने
असफलता हाथ लगी है लेकिन
आशा ने स्वप्न मधुर पाले है।

एक नदी पार जो उतरनी थी
वाहो मे कभी नहीं भरनी थी।
वोए तो सूर्यबीज बोने थे
होते तो कल्प वृक्ष होने थे
पावो मे तिमिर चक्र उलझे पर
आखो मे धैर्य के उजाले हैं।

कैक्टसी युग

अन्तराल की कारा के एकाकीपन मे से
छूटे हुए प्रसगो से अब कैसे पुन जुडे ?

इतने ऊचे उडे गगन मे
टूट गये डैने
और घौंसले मे अब जाने
कौन लगा रहने
धरा और आकाश निमत्रण फिर भी देते हैं
पर ऊचाई नापे कैसे किस के लिए उडे ?

अति गहरी हैं जडे यहा पर
परम्पराओ की
और घनेरी अब भी बेले
हैं निष्ठाओ की
सामन्जस्य बिठाए कैसे कैक्टसी युग मे
प्रौढ हुए बरगद की शाखे सम्भव नहीं मुडे।

बिम्ब हमारे

मेरे गाव कहा अब छप्पर ककरीट के घर है
अलगोजो की धुन कहा हैं बन्दूको के डर हैं

रखी हुई हैं रिस्टवॉच मे बारूदी शकाए
ठाणी ठाणी बनी हुई है रावण की लकाए
राजनीति चौराहे पर हतप्रभ सी खडी हुई है
आज अहिसा के काधो चढ हिसा बडी हुई है
ऐसे मे करूणा से कोई कैसे ब्याह रचाए
अब इन्सानी रिश्तो के मन रखे हुये पत्थर हैं।

अविश्वास का धुआ जमा है पीपल के पत्तो पर
चतुराई की दृष्टि टिकी है मधुमक्खी छत्ता पर
नीलाथोथा पसर गया है केसर की क्यारी मे
कोई भींग नहीं पाता है अब आसू खारी मे
ऐसे म ममता का कोई कैसे साथ निभाए
जहा आस्था क पर टूटे बिखरे तितर बितर हं।

टिड्डी दल सा टूट पडा है भौतिक सुख जीवन पर
जाने कितने बाण सधे हैं प्रश्नो के चिन्तन पर
अपनी ही धडकन अब हम को भ्रम मे डाल रही है
अपने चेहरे की विकृति खुशफहमी पाल रही है
ऐसे मे अब कैसे खुद को दर्पण सम्मुख लाए
जहा हमारे बिम्ब हमी से माग रहे उत्तर है।

आत्म निरीक्षण

थाथा बोझ अहम् का
ढोते रहने से ज्यादा
सुख मिलता है कही
सरल से आत्म समर्पण मे ।

कच्चा चिट्ठा गोपनीय होकर भी मौन नहीं
शकित मन की शकाओ से अवगत कौन नहीं
इस से और अधिक क्या
विज्ञापित होने को था
अपना चेहरा ही प्रतिम्बिबित
है हर दर्पण मे ।।

अन्धा दर्प भटकता यश के गाव और शहरो
भटकन ही को लक्ष्य समझकर मुदित हुआ पहरो
अल्पज्ञान के चक्रवात मे
घिरा न समझेगा
कितना सत्य उभर आता है
आत्म निरीक्षण मे ।।

आत्म ग्लानि की हत्या कर वैभव पाया तो क्या
यही विकल्प भला कब सम्मानित होने को था
बनकर वट का वृक्ष
फैलने का क्या सज्ञा दे
भेद नहीं कुछ उस की छाया
मे ओ शोषण में ।।

ओ मेरे एकाकीपन

कोई नहीं उदास क्षणो मे
ओ मेरे एकाकीपन ।

सम्बन्धो की कितनी बेले
पनपीं फैलीं सूख गईं
आत्मीयता की कलिकाए
मुखर हुए बिन मूक हुईं

यादो की अब सूखी झाडी
लिए हुए हैं
आलिगन ।

सन्नाटा भी नहीं यहा पर
और नहीं है कोलाहल
भटकन नहीं नहीं स्थिरता
कहीं नहीं कोई हलचल

उत्पीडन की धुध अटा है
सवेदन का हर
दर्पणा ।

श्रद्धाजलि (भवानी प्रसाद मिश्र)

फिर हुआ है एक उल्कापात
'अपने ही गगन से ।

टूटते ही पिण्ड
तारो मध्य अति हलचल हुई
दूर तक एक रेख
उज्ज्वल दीख कर ओझल हुई
फिर उतर आई अन्धेरी रात
अपने ही गगन से।

मर्म तक आहत
हवाए सिसकिया भरने लगीं
आर्द्र सी आकाश
आखे ओस बन झरने लगीं
र्दद की होती रही बरसात
अपने ही गगन से ।

चन्द्रमा पीला पडा
आकाश गगा जम गई
सौर मण्डल की
सुधीरा स्वास सहसा थम गई
एक ध्रुव का फिर हुआ है पात
अपने ही गगन से ।

जाल मछेरो के

रात रात भर जाग जाग कर
उल्कापात गिने
या फिर देखे स्वप्न सुनहले
नए सवेरो के ?

सशय के चौराहे पर ही साझ उतर आई
दिशा भमित पीढी को कोई राह न दिख पाई
इस से पहले और घनेरा
अन्धकार छाए
अब भी रख दो दीप वक्ष पर
घिरे अधेरो के ।

गर्भवती यदि हुई विषमता कुण्ठा जन्मेगी
लाचारी की बाझ कोख पर तब क्या बीतेगी
सहनशक्ति के भोलेपन का
यह परिणाम हुआ
पथ के बने प्रदर्शक अनगिन
रूप लुटेरों के ।

बचपन से विधवा इच्छाओ के सवेदन को
बधिर हो गए श्रवण शक्ति के सुना न क्रन्दन को
इस से है अनभिज्ञ मीन
अन्धी अभिलाषा की
सारे जल मे फैल चुके है
जाल मछेरो के ।

हरा लेन्स

पेट भरे भाषण से कोरे आश्वासन से
मन मसोस रह जाते तृष्णा को पीते हैं
बहुधा हम सब के सब ऐसे ही जीते है

पत्र–पत्रिकाओ मे
खूब छपी हरित–क्राति
फुट–पाथी मानव की
कहा मिटी भूख क्लाति
ढेर लगा धानो का साख्यकाय पुस्तक मे
दामन पर अब तक भी
रीते के रीते हैं।

मुट्ठी–भर लोग यहा
हरा–लेन्स पहने है
इन से दु ख दर्द भला
अपने क्या कहने हैं
इन के ही चलने के लिए आज मखमल पर
राजनीति जूता है
हम केवल फीते हैं।

नाटक प्रारम्भ हुए
दशको ही बीत गए
नायक के हाथो ही
खलनायक जीत गए
अपने को सभ्य शिष्ट मानव कहलाने को
आक्रोशी होकर भी
अधरो को सीते हैं।

घट रीत गया

जीत गया वर्तमान जीत गया
टुकडो मे बिखर कर अतीत गया।

खण्डहर सी गुजित है स्मृतिया
दर्पण की किरचो सी हैं सुधिया
शन शन दिवा–स्वप्न टूटे हैं
गीतो के बजारे रूठे हैं
कडवाहट भरी और जाने कब
मधुर मधुर मधु का घट रीत गया।

डायरिया वर्षों की ढेर लगीं
किन्तु इन्हे पढने को समय नहीं
जितने भी पत्र डाक मे आये
उन के भी उत्तर कब दे पाये
सुबह शाम शाम सुबह के क्रम मे
जाने कब जीवन–क्षण बीत गया ?

चटखे हैं काच बहुत चित्रो के
भूल गए नाम कई मित्रो के
डूब गईं समय के समन्दर मे
प्रतिमाए नहीं रहीं मन्दिर मे
पूजा की पावनता के क्षण का
जाने कब कौन बुरा चील गया ?

सत्य उभर आया

टूट टूट कर बिखर जायेगे
तेरे सब विश्वास
मन को समझाया बहुतेरा
दुष्ट नहीं माना ।

भरा हुआ था किसी
एक गड्ढे मे थोडा जल
हम ने ही की भूल कि
समझा स्वच्छ और निर्मल
किन्तु जरा सी गिरी ककडी
गद उभर आई
गदलापन इतना गहराया
दिखी न परछाई
जिस सरवर के तल मे दलदल उस तट क्या जाना ?
मन को समझाया बहुतेरा दुष्ट नही माना ।

जितनी भी तितलिया दिखी
रग रूप बहुत अच्छे
पीछे पीछे रहे दौडते
ज्यो भाल बच्चे
छूते ही पर पख
पख का रग उतर आया
बच्चेपन का कितना
जल्दी सत्य उभर आया
उडते रगो की तस्वीरो का अपनाना क्या ?
मन को समझाया बहुतेरा दुष्ट नही माना ।

प्रतिबिम्ब बिखरते है

गहरी हुई दरारो को भरने का यत्न करु
या फिर रहू दखता इन गिरती दीवारो को ?

चटखे हुए दर्पणो मे
प्रतिबिम्ब बिखरते हैं
अपने चेहरे की विकृति
के वहम उभरते है
किर्च किर्च हो गये आईने से क्या मोह रखू
या फिर करू सुपुर्द इसे भी गई बहारो को ?

अनगिनती थे साथ
साथ चलने का धैय लिए
इसी भावना के अन्तर्गत
विष के घूट पिए
सहता रहू यही दुर्स्थिति अधर सिले रख कर
या फिर कर दू व्यक्त हृदय मे उठे गुबारो को ?

किल किल काटे जहा
बनी हो शकाए मन पर
दीवारे धुल सक नही
है जल इतना घन पर
खुली हुई पुस्तक जैसे अन्तस की थाह गहू
या फिर रहू निभाता इन थोथे व्यवहारों को ?

जीवन तलाश

वाहर है कोलाहल भीतर है सूनापन
ओ मेरे उन्मन मन
जीवन तलाश हो न यू उदास ।
फूलो मे कलियो म
कुजो मे गलियो मे
पतझर के जाने मे
मधुरितु के आने मे
मछुओ के गाने म
जीवन तलाश हो न यू उदास ।
खेतो खलिहानो मे
लोहे की खानो मे
रेतीले मरूथल मे
शहरो की हलचल मे
जीवन के हर पल मे
जीवन तलाश हो न यू उदास ।
मानव की आशा मे
मन की अभिलाषा मे
जल रहे सवालो मे
पावो के छालो मे
गेहू की बालो मे
जीवन तलाश हो न यू उदास ।
ग्वालो की मस्ती मे
भीलो की बस्ती मे
जगल की छीडो मे
सडको की भीडो मे
पक्षी के नीडो मे
जीवन तलाश हो न यू उदास ।
आषाढी बादल मे
बादल के काजल मे
कविता के छन्दो मे
गीतो के बन्दो मे
उडते मकरन्दो मे
जीवन तलाश हो न यू उदास ।

कोई कृष्ण

ऊपर से भरे पुरे भीतर से रीते हैं
हम मे से ज्यादातर ऐसे ही जीते हैं।

आखो मे उडती जो
अबाबील आशा की
घौंसला बनाने को
तिनके कब पाती है
अपने ही पख टूट
चुभते हैं अपन ही
अपनी ही लाचारी
लोरिया सुनाती है
अम्बर की ऊचाई आकर्षित करती पर
अनचाहे पिंजरे मे जीवन क्षण बीते हैं ।

पारिजात वृक्षो पर
कोटरो मे तोतो के
बच्चों को सापो ने
रातो मे खाया है
कलरव जो समझ रहे
खग भाषा ज्ञान बिना
तोतों ने दिन निकले
शोर भर मचाया है
नाथेगा कौन यहा नाग कोई कृष्ण नहीं
इसी लिए धूप चढे होठों को सीते हैं ।

सपनों की कोपल पर
पडी ओस बून्दो को
चाट रात काटी है
भटकते अभावों ने
दिन के बजारे को
क्षत–विक्षत कर डाला
ककरीली राहों पर
समय के तनावो ने
मजिल तक पहुचेगे कैसे ये पाव थके
फटे हुए जूतों के टूट रहे फीते हैं ।

भू पर नम

आओ सपनो से आज ले नयन
साफ साफ देखे दो पल जीवन।

दौड लिए बहुत दूर दगडे परिपाटी के
उतरे यू गहनतम अधेरे मे घाटी के
छोडो यह पिटी लीक खण्डहर तक जाती है
वहा मात्र ध्वनिया की प्रतिध्वनि ही आती है
पुरखो की बातो को
ही दुहराओगे
आगामी पीढी का
तुम क्या द पाआग
भू पर नभ लान क खल रचो
अनहानी करने को है यौवन ।

माक्ष प्राप्त करने की बाते हैं अर्थहीन
तरूणाई क मन का बनन दो कुछ युगीन
मानव का रहन दा जीवन से ओत–प्रोत
चित्रयुक्त जीवन ही जीने का मधुर स्रोत
जीवन ही नापेगा
अम्बर की ऊचाई
जीवन ही पाटेगा
दोषो की हर खाई
इस युग की अभिलाषा को देखो
अन्तरिक्ष–कॉलर मे टाकली बटन ।

एक आख देख रही भीतर

अनगिन ये रेखाए
कितनी भी बडी सही
अर्थ क्या रखेगी जब सभी समानान्तर ?
आतकित करता है
थोथापन अपना ही
अपनी ही दुर्बलता
हम को खा जाती है
प्लास्टिकी शक्लो को
लेकर हैं घूम रहे
तथा कथित सुन्दरता
हर क्षण भरमाती है
एक आख देख रही भीतर
दूसरी दिवा–स्वप्न
दोनो ही आखे पर कितना दृष्टिान्तर ?
दौड रहे भयाक्रान्त
दिशाहीन राहो पर
यश की रथ–यात्रा मे
पिछ्ड नहीं जाने को
प्रशस्ति के धरातल से
पानी को नाप रहे
ग्रसित हैं ललक से जो
यशस्वी कहाने को
सब ही आकारो के
पात्र भरे पानी से
किस को क्या सज्ञा दे केवल रूपान्तर !

युग नाम नही लेगा

क्यो गुम सुम बैठे हो मन मे एकत्रित कर
ये सारहीन दु खडे कुछ काम न आयेगे ?

माना ऐतिहासिक है खण्डहर की दीवारे
वैभव गरिमा की हैं गाथा ये मीनारे
पर गत का गौख ही तो काम नहीं देगा
यदि नया न कुछ जोडा युग नाम नहीं लेगा
टूटे सन्दर्भो से मन मोह नहीं रखना
ये अर्थहीन टुकडे कुछ काम न आयेगे ।

श्रद्धानत हम भी हैं गत के हर लेखन पर
पर इस का अर्थ नहीं चलना है चिन्हो पर
है प्रश्न बडा मौलिक उत्तर कोई देना
कब तक शोभा देगा किटकिन्हो पर लिखना
मन वाद विवादो की उलझन बेमानी है
ये तथ्यहीन झगडे कुछ काम न आयेगे ।

तरू आन्धी अन्धड मे हैं जो भी झूम रहे
माना गतिविधियो के हैं मस्तक चूम रहे
पर एकाकी बिरवा आगन मे तुलसी का
उपवन की हलचल से हे अर्थ अधिक रखता
इस बदरगी युग मे मन अनासक्त रहना
ये बहुरगी मुखडे कुछ काम न आयेगे ।

भूखो का शहरीपन

ये कैसा दिन निकला
य कैसा सूर्य उगा
सपनीली दुनिया को यन्धन से जोड गया ।

आगन मे बिछी हुई
थी मोमी उजियारी
तडके ही खुरच गई
जगने की लाचारी
सपनो की देह छिली कुछ रक्त छलक आया
जब मौन नही बोला तब अश्रु ढुलक आया
ये कैसा दर्द उठा
ये कैसी जलन हुई
सुधियो के घेरे को जीवनक्रम तोड गया ।
दिन भर ही बनीं रही
गतिविधिया बाजो की
गिद्धो के खोज रही
कुछ ताजी लाशो की
मुह खून लगी इच्छा ने मास नौंच खाया
अब घाव लिए गहरा है घूम रही काया
ये कैसा घाव हुआ
कोई भी नही दवा
भूखो का शहरीपन झूठन को छोड़ गया ।

मोहन की याद

तुलसी का बिरवा तो सूख गया सर्दी में
कैक्टस का पौधा पर रक्षित है गर्मी में
नीम आम, बर्गद अब पिछड़ेपन के द्योतक
फैशन है बढ़ आई बौनजई पेड़ों तक
जब कोई चन्दन वन रातों में कटता है
ऐसे में बरबस ही बारबार आती है
मधुबन की याद ।
कटुता की बेलो का साया जहरीला है
षडयत्री मानव का हृदय अति कसीला है
कुण्ठा के नाग यहा जनजन को घेरे हैं
चरम सभ्यता युग में पशुता के डेरे हैं
जब कोई भोलापन जीवन बन आता है
ऐसे में बरबस ही बारबार आती है
बचपन की याद ।
कोट था उसूलो का सर्दी मे पहन लिया
गर्मी जब आई तो सोच समझ फैंक दिया
नेकी के जनमन से चिन्ह सभी उखड़े हैं
दिखते हैं सुन्दर पर प्लास्टिकी मुखड़े हैं
जब कोई बहरूपी मौलिक बन आता है
ऐसे मे बरबस ही बारबार आती है
दर्पण की याद ।
गौतम का परदेशी यद्यपि गुण गाते हैं
गगा के तटवासी गगा कब नहाते हैं
सपने की बाते हैं वेदों का पाठ यहा
चौपालो पर आल्हा भवनो मे भजन कहा
जब कोई क्लारनेट बजती है गलियो मे
ऐसे मे बरबस ही बारबार आती है
मोहन की याद ।

गीतो के गाव

तुम ने क्यों खींच दीं लकीरें
दर्पण पर
बिना अर्थ जाने ?

कॅवारी अभिव्यक्त के
हृदय से
यौवन का भार
तडप रहा मरियादित
छन्दो के
जाने उस पार

डालो मत जजीरें
ऐसे क्षण
इच्छा के पाव
कीलो मत कीलो से।
ठौर ठौर
गीतों के गाव

पल भर उड़ने दो सपनों को
पखो पर
क्षितिज नए पाने।

स्यानी अभिलाषा का
मनमोहक
मौन मुखर रूप
झुलसाए नहीं कहीं
चितकबरी
आषाढी धूप

कुजों में साघो की
छाह घनी
बैठो उस ओर
गाओ फिर मेघ-राग
प्यासे हैं
आशा के मोर

अभी और रहने दो वशी को
अधरों पर
गीत मधुर गाने।

सडको पर धूप

ग्रीष्म ने लिए हैं अब
पख फिर पसार
इस बार ।
लपट सी दीखाई दी
सडको पर धूप
भरती फुफकार लू
नागिन के रूप
कारो मे शीशो के
जाती है पार
हर बार ।
कूलर के पखे की
पाखुरी हिली
खिडकी के पर्दे को
जिन्दगी मिली
अकुलाहट ठहर गई
गर्मी के द्वार
लाचार ।
अभिमानी रवि ने जब
झुलसाये वृक्ष
अपने को समझा वह
शक्तिमान दक्ष
आगन की नागफनी ने
दी ललकार
कर बार ।
तीसरे पहर को श्रम
पीढिया बढी
सूरज की किरणे तब
सीढिया चढी
बदलते समय से यू
सूर्य गया हार
मन मार ।

उखड गये अक्षर

बरस गये पीडा के आगन मे
उद्वेलित घन ।
तुतली अभिलाषा के सपनीले चित्र
एक एक बिछडे ज्यो बचपन के मित्र
हाथ पैर बान्ध गई सीमा की डोर
बारबार भींज उठी कजरारी कोर
तडप रहे यौवन की कारा म
मरियादित मन ।
ब्यार बही पुरवाई कसक उठी पीर
विस्मृति के आचल को गई चीर चीर
आखो से टूट गिरे तारे से स्वप्न
आसू बन ढुलक गये प्यारे थे स्वप्न
झूल रहे सुधियो मे सुधियो के
इने गिने दिन ।
शून्य मे विलीन हुआ सिगरेटी–धुम
थोथापन निगल गया कचन सी उम्र
तख्ती से नाम की उखड गये अक्षर
कान मे पुकार गया कोई सब नश्वर
डूब गये दर्पण के पानी मे
प्रतिबिम्बित क्षण ।

सूर्य की प्रथम किरण

यौवन के वचपन की तुतली भाषा
मधुरस हे घोलती ।

फूल रही सरसो सी हर आशा
झूल रही झूले मे अभिलाषा
फूक दिया भाग्यतिमिर गई रात
अगडाई ले उठा फिर नव प्रात

सूर्य की प्रथम किरण शबनम के
मोती है रोलती ।

असफलता लौट गई दबे पाव
जगता जब दीखा परिश्रमी गाव
कायरता ने टेक दिये घुटने
साहस के जब शीश लगे उठने

आशा की अबाबील अम्बर मे
पख नए खोलती ।

धूए की आकृतिया

अपना सुख पाने को
घावो से खेले पर
घायल ये बासुरिया मधुर मधुर गाती हैं।

सिगरेटी युग है यह हर कोई पीता है
क्षण–भर के दो कश मे क्या क्या बन जीता है
सिगरेटे पीना भर
दोष नहीं कोई पर
धूए की आकृतिया मन को भरमाती हैं।

रील कैम्रा बल पर कलाकार बनते हैं
उतरी तस्वीरो को नवकृतिया गिनते हैं
दृश्यो का छायाकन
करना कब वर्जित पर
तस्वीरो की छविया सच को छल जाती हैं।

अपना प्रतिबिम्ब खडा देख लिया दर्पण मे
माथे की कालिख को पौंछ दिया पलछिन मे
धब्बा मिट जाना तो
सम्भव होता है पर
सामाजिक स्वीकृतिया भारी हो आती हैं ।

जीवन की परिभाषा निज सुख तक सीमित है
मन तो है गौण यहा तन की ही कीमत है
पेर्दों के पीछे तो
सब कुछ ही होता पर
अधुनातन मरकरिया आखें मुदवाती हैं।

सान्ध्य–गीत

एक रीतापन यहा है और मैं हू
तुम जहा भी हा मुझे मत याद करना ।
चहचहाहट छम्म पडती जा रही है पक्षियो की
सनसनाहट मन्द पडती आ रही है पत्तियो की
एक सन्नाटा उभरता दीखता है हर दिशा से
थकित दिनभर का दिवस मिलने चला है फिर निशा से
साझ की निस्तब्धता है और मैं हू
तुम जहा भी हो मुझे मत याद करना ।
तृषित रवि डूबा वहा पर दूर सागर के किनारे
इस समय के फेर को काई यहा आकर निहारे
कालिमा की बोलता है जय धुआ पर चिमनियो का
आह ! नीला पड गया है रक्त श्रम की धमनियो का
हृदय मे मेरे व्यथा है और मैं हू
तुम जहा भी हो मुझ मत याद करना ।
फाइलो के घर सुबह से जिन्दगी मेरी रहन थी
इसलिए अनुचित उचित हर बात चुप रह कर सहन की
किन्तु अब मैं मुक्त होकर जब वहा से आ गया हू
भूल पाऊ हर व्यथा को द्वार वह मैं पा गया हू
हाथ मे मेरे दिया है और मैं हू
तुम जहा भी हो मुझे मत याद करना ।

चिन्तन नए नए

उड़ाओ आज अबीर गुलाल
कि गाओ नए नए कुछ गान
कि फागुन नए नए ।
आज नारी का रूप विचित्र
दीखती वीरो का सा चित्र
हाथ मे लेकर के तलवार
रही वह दुश्मन को ललकार
बदल दो परिभाषा श्रगार
कि कगन नए नए ।
आज है प्रश्न मान सम्मान
उगाओ फसले नई किसान
सैन्य–दल ने झेले हमले
मेरे मजदूर न तू दम ले
न रक्खो केक्टस के गम्ले
कि आगन नए नए।
जवानी के अगड़ाते सपन
देखते कहा धूप औ तपन
तुम्हीं हो रत्न देश के पास
तुम्हीं हो मा बहनो की आस
समय है लिख दो नव इतिहास
कि यौवन नए नए ।
समय की जो सुनता आवाज
सगय उस पर ही करता नाज
ब्रदलता समय सैंकडो भेस
वताते खण्डहर के अवशेष
बदल दो सिद्धान्तो के वेश
कि चिन्तन नए नए ।

चन्दन मन भावन

प्रफुल्लित नगर नगरिया गाव
अजिर मे रूनझुन करते पाव
ये आगन मन भावन ।
मस्त है रसिको की टोली
झूमती फिरतीं हमजोली
उड रहा चहु दिश आज गुलाल
धरण से अम्बर तक है लाल
हृदय सब के ही हुए विशाल
ये फागुन मन भावन ।
मची है ठौर ठौर होली
रगो मे केसर सी घोली
द्वेष का बन्द हुआ है द्वार
रग की प्यार भरी बौछार
गले मे बाहो के हें हार
ये बन्धन मन भावन।
नारिया गाती हैं होली
ढोलकी ढुमक ढुमक बोली
कही पर बाजे झाझ मृदग
कही पर गूज रही है चग
वृद्ध भी खेल रहे हैं रग
ये बचपन मन भावन।
कही पर पिचकारी बोली
किसी ने मटकी ही ढोली
किसी का गोरा मुख है लाल
कही पर नीले पीले गाल
किसी के मिट्टी लिपटी भाल
ये चन्दन मन भावन।

सूख गए ताल

सूख गये पेड पात सूख गये ताल
नक्शो मे विछा रहा कूओ का जाल।

निपट गया धान
और निपटा है चारा
भूखे हर प्राणी को
देह बनी कारा
चक्की भी रूठ गई
चूल्हा भी रूठा
ममता के हियरा का
धीरज भी छूटा
विलख विलख उठती है
देख देख वच्चो को
भूखा बेहाल ।

वर्षा बिन युग बीता
किन्तु नहीं आई
धरती के पाव मे
फटी है विवाई
यौवन के आगन मे
बरसा कब बादल
रहा सहा सूख गया
मृगनयनी का जल
अगडाई दूर रही
अल्लढता भूल गई
मदमाती चाल ।

धरती थी स्यानी पर
चढी नहीं हल्दी
मौसम बेदर्दी ने
मुख कालिख मलदी
दिन तो थे गोद भरे
फूलो से फल से
प्यासी अति धरा
किन्तु वचित है जल से
गलबहिया डाल डाल
झूमीं इस बार नहीं
गेहू की बाल।

माटी मे बीज जिये

सपनो से आजे थे धरती ने नयन मगर
अनावृष्टि निष्ठुर ने ज्योतित दृग छीन लिया।
केसर की बिटिया ने अब के ही सावे मे
अपनी प्रिय गुडिया की शुभ शादी तैय की थी
आने पर नई फसल कुछ पैसे देने की
दादा ने नातिन को अनुमति भी दे दी थी
बहुतेरे यत्न किये माटी मे बीज जिये
आई पर फसल नहीं सोया था भाग्य कही
गुडिया तो दूर रही केसर की बिटिया ही
बून्द बून्द पानी को तरस गई तडप रही
केसर पर निरूपाय उत्पीडित उनमन मन
देख देख बिटिया को भर भर कर लाय हिया।
धनिया का इकलाता रामू बहद भूखा
सरकारी मोटर को प्यासा सा देख रहा
लाइन मे बैठे सब बच्चे अति व्याकुल पर
नम्बर कब आय हाय दृश्य नही जाय सहा
भोलू के माथे पर चिन्ता की रेखाए
चारे बिन खूटो पर तोड रही दम गाये
जीवन का अर्थ हुआ भूख प्यास लाचारी
सिसकी मे बदल गई शिशुओ की किलकारी
शैशव भी मुह देखा यौवन भी परवश सा
वृद्धो की आखे ज्यो बुझता ही जाय दिया।

अनबोली शर्त

शूल बना दर्पण की किरचो का
एक एक कण।

पत्तो से विखर गए
पिछले सम्बन्ध
टूट गये पक्के से
पक्के अनुबन्ध

जीवन को निगल गई
स्वासो की पर्त
हर रितु मे कसक गई
अनबोली शर्त

वर्फ सी बिखेर गया आगन मे
सुधियो का घन।

पन्नों को पलट गई
चचल वातास
मुखर हुआ एक और
कच्चा इतिहास

सभ्य कहे जाने को
पहने थे वस्त्र
सत्य मगर छिपा
नहीं फेला सर्वत्र

टूट गया कुर्ते के कॉलर का
आखरी बटन।

सीमाए लाघ गया
अभिमानी दर्प
मन ऐसे भटका
ज्यो अन्धा हो सर्प

केंचुली ने दृग पर
डाल दिये पर्दे
ज्ञात नहीं काल कब
और विवश कर दे

फिसल गया जीवन की मुट्ठी से
सयम का क्षण।

बन्द मगर द्वार मिले

सतरगी किरणो को जकड लिया बादल ने
जाने क्यो पाश मे ?

खिडकी के शीशो पर
अनचाही सी लिपि मे
बूदो ने लिख दी थी
बादल की मनो व्यथा
किन्तु कक्ष का वासी
अपने मद म डूबा
समझ नही पाया कुछ
दर्दो की व्यथित कथा
मनुहारी मौसम मे तैर गई खामोशी
भींगी वातास मे।

सावनी फुहारो ने
कारो क लोगो तक
जाना तो चाहा था
बन्द मगर द्वार मिले
भावना फुहारो की
बिखरी तो ज्ञात हुआ
सभ्य कहे जाते जो
कितने बेप्यार मिले
तिरस्कार ने टाके अनचाहे जुज अनगिन
गूगे इतिहास मे।

दीप जले तक

आया हू लौट
लम्बी पद–यात्रा से
साझ ढले तक !

कितने ही चौराहे कितनी ही पगडडी
मजिल तक आने को दिनभर मे पार करी
कहीं कहीं धूप मिली कहीं कही छाह घनी
वाजारो मे भटका विका मगर कहीं नही
प्यासा था किन्तु किसी
पनघट पर नहीं रूका
कोई मरियादा थी
इसीलिये नही झुका
पहुचा निज बस्ती जव
मन ने दम तोड दिया
कोई भी चौखट पर
बाट नहीं जोह रहा
दीप जले तक !

अनगिन थे सहयात्री बिछडे कुछ ठहर गये
उन के ही दिए दर्द किरचो से पैर गये
मेरा सुख छीन लिया मुझ से वटमारो न
जीवन को निगल लिया थोथे व्यवहारा न
इने गिने सपने थे
वे भी मुह मोड गये
दुनिया की कटुता से
मुझ को हैं जोड-गये
मन ने फिर समझाया
और कोइ राह चलू
पावनता आहत हो
फुफकारी भर आई
ग्लानि गले तक।

मन्त्र पढी कौडिया

आया कब गाव मे तुम्हारे
स्वार्थी–भ्रमण पर ?

मानी ही कभी नहीं थोथी मरियादाए
अर्थहीन घोषित की सामाजिक सीमाए
सर्वश्रेष्ठ समझा था मन की पावनता को
इतना ही कहना था यदि कोई सुनता तो
दुनिया ने किन्तु मुझे विषधर की सज्ञा दी
शकालू लोगो ने गतिविधि मेरी कीली
दद बहुत जब उभरा तब जाकर ज्ञात हुआ
चिपकी है अनगिनती मत्र पढी कौडिया
शापित मन के फन पर।

मैंने हर सरिता को गगा ही था माना
पापी की श्रद्धा को पर किसने पहचाना
घाट घाट जाकर जो गगाजल पान किया
यानी हर तीरथ को कितना सम्मान दिया
पण्डो ने किन्तु मुझे यात्री भर ठहराया
पुण्य–पाप के अन्तर मे मुझ को उलझाया
धार्मिक प्रपचो से ऐसी कुछ ग्लानि हुई
व्यर्थ ही चढा उतरा घाटा की सीढिया
मैं मेरे जीवन भर ।

अपेक्षित था हम से

पहले तो पैठ गहरे सागर मे
और फिर लौट आये
लेकर के सीपिया
क्या यही अपेक्षित था हम से ?
याद नहीं
किन्तु कभी घुटनो हम चले थे
अपने से वडो की
पकडी थीं उगलिया
उन्हीं के दिये सरक्षण मे पले थे
किन्तु आज उन के जव
पैर लगे कापने
और हम सक्षम हैं
चाहे जब दौडकर मीनारो तक पहुचे
और फिर चढे नहीं
विल्कुल भी सीढिया
क्या यही अपेक्षित था हम से ?
पिजरो मे जन्मे हम
तुम ने ही समझाया मुक्ति के विषय मे
समझे तो आख खुली
कोई भी बन्धन अब
सहन नहीं करना है तय किया हृदय मे
किन्तु अब रूढिया
पावो में बान्ध रहे हो तुम हमारे
इस का तो अर्थ हुआ
पहले हम मुक्ति के लिए जूझे
और फिर काटे नहीं
पावों की बेडिया
क्या यही अपेक्षित था हम से ?

मृगतृष्णाओ के द्वार

आखिर क्यो जाया जाय
उल्काओ के द्वार
बार बार ?
मुखौटो की आड मे
घूमते है लोग सफेद–पोश
जिन्हे अपने अपने दामन का
कुछ भी नही होश
ऐसी भीड मे होकर शरीक
आखिर क्यो जाया जाय
छलनाओ के द्वार ? बार बार ।
अनुत्तरित है जहा
शिष्टता के सारे प्रश्न
लोग वही पर मना रहे है
अपनी अपनी अभद्रता का जश्न
जब दीखता ही नहीं दर्पण के आरपार
आखिर क्यो जाया जाय
कुण्ठाओ के द्वार ? बार बार ।
मरूस्थल मे दूर तक पदचिन्ह
छोड जाने का कोई नहीं अर्थ
करवट बदलती रेत पर
कब तक बनाओगे घरौंदे व्यर्थ
जहा कदम कदम पर मरीचिकाए हो अपार
आखिर क्यो जाया जाय
मृगतृष्णाओ के द्वार ? बार बार।

यातना मरु की

अनायास
कागज पर खिच गईं लकीरो को
तुम ने क्यो एक नया अर्थ दे दिया ?

मैंने कब चाहा था तुम को कुछ कह आये
मूक दर्द मेरा
इतनी सी घटना ने ज्ञात नहीं तुम पर कब
डाल दिया घेरा
मैंने तो कभी नहीं अपने को जोडा था
नाम से तुम्हारे
दूर कल्पना मे भी स्वप्न नही देखा था
गगा
कोई दिन आ पाव को पखारे
हृदय की सवेदना
बधिर तो नहीं थी पर जाने कब तुम ने
सगीतमय किया ?
हृदयहीन धरती पर यातना सही थी नित
नेह रिक्त मरु की
कभी नहीं मागी पर जीवन को छाह मिले
किसी कल्प तरू की
अपने को कभी नहीं चाहा था भार बनू
किसी के हृदय का
कभी किसी दर्पण ने अवसर भी नही दिया
बिम्ब के विलय का
जीवन को मेरे
अब सार्थक करोगे तुम ऐसा क्यो सहसा ही
सकल्प ले लिया ?

काल सधि पर हम

पक गये हैं अब हमार कनपटी के बाल
आओ तुम सभालो ये नया ससार
तुम को टेरता है।
विगत का जो कुछ नया था
और था जीवन्त हम ने ही ग्रहण कर
यत्न से उस को सजाया था सवारा
और अपने स्वेद–श्रम को
आख भर हर दिन निहारा
एक आभा दी समय को
और गति इतिहास को दी
रौशनी बाटी अन्धेरो मे
छटा मधुमास को दी
आ गये जूते हमारे अब तुम्हारे पाव
आओ तुम सभालो ये नया ससार
तुम को टेरता है।
हम हमारे समय के सूरज रहे जब
तब अजिर मे धूप से सस्कार बाटे
दूर तक सतति सुसस्कृत–पथ चले यू
रास्ते भर के कुटिल सब झाड काटे
शक्ति भर नव चेतना का
शख फूका था चहो दिश
सभ्यता के भाल को उत्तुग
रक्खा था अहर्निश
हो गये कन्धे–भुजाए अब तुम्हारे पुष्ट
आओ तुम सभालो ये नया ससार
तुम को टेरता है।

बीज, सूरज, हवा और मा

हो गये सही पहाड नगे
कट गए सही सारे चन्दन–वन
सूख गया सही
आगन म तुलसी का बिरवा
तब भी
जब तक बीज छोडता नही अकुरित होना
तब तक
हमे हताश नहीं होना।
घेर रहा सही हमे विध्वस
छा रहा सही चारो ओर अन्धेरा
हा गई सही हमारी नियति असहाय
तब भी
जब तक सूरज छोडता नही रोज सुबह उगना
तब तक
हमे हताश नहीं होना।
जीत गया सही विश्वासघात
हार गया सही धीरज
हो गईं सही सवेदनाए अप्रासगिक
तब भी
जब तक मा छोडती नही बच्चे को दूध पिलाना
तब तक
हमे हताश नहीं होना।

और गजलें

स्वय को त्यागना होगा

अभी कुछ और तपना है पिघल कर द्रव्य बनने तक
बहुत सी चोट खानी है कलाकृति भव्य बनने तक

किसी भी साधना मे धैर्य का ही अर्थ होता है
हजारो व्यग्य बीधेगे निपुण एकलव्य बनने तक

हृदय के तार जाते है उलझा मिजराब मे बहुधा
बडी आराधना करनी पडेगी श्रव्य बनने तक

बहुत लम्बी अजानी यात्रा के हर चरण पर ही
स्वय को त्यागना होगा स्वय गन्तव्य बनने तक

भला इस से अधिक क्या आत्मा की दिव्यता होगी
सलीबो पर लटक जाये मनुज मन्तव्य बनने तक

कुर्सी लील गई

जाने कौन घडी चौखट मे ठोकी कील गई
विगत रूढि आगत को अपने घर मे कील गई

धरा पीठ पर हाथ दया ने सिसकी फूट पडी
सवेदन के चन्दन तरू को करूणा छील गई

ऐसा हुआ प्रकोप यहा पर पछवा ब्यारो का
राधा की चूनरिया उडकर उलझ करील गई

असताष का सर्प विषेला जो पजा मे था
फैंक हमारे आगन मे अपशकुनी चील गई

जाने क्या हो गया हमारे जीवन दर्शन को
पूरे के पूरे चिन्तन को कुर्सी लील गई

युगीन हो गए

स्वतत्रता के दर्शन मे इतने हम प्रवीण हो गए
स्वार्थ के लिए अपने सहिता विहीन हो गए

उम्र भर जुटाने मे सुख और सुविधाए
रीतते गये प्रतिदिन मूल्यबोधहीन हो गए

एक वक्त वह भी था सूर्य थे कभी हम भी
टूट कर गिरे ऐसे शीत हो जमीन हो गए

अस्मिता की गुदडी को व्यर्थ ही रहे ढोते
जो बदल सके चोले अन्तत युगीन हो गए

समय के समन्दर की वेगवती लहरो से
रेत पर नाम जो लिखे शून्य मे विलीन हो गए

जी लिए अभावो मे याचना नहीं की पर
आस्था बचा तो ली दृष्टियो मे दीन हो गए

सूखी बन्दनबारे

जब जब टूटी है पतवारे
तब तब मित्र बनी जलधारे

गिरता ही जाता है मानव
जैसे खण्डहर की दीवारे

यश के पीछे दौड रहे जो
साधक है कैसे स्वीकारे

लोचनहीन किसी दर्पण मे
कैसे अपने बिम्ब निहारे

मानव सभ्य हो गया इतना
जैसे पत्थर की मीनारे

क्या श्रम के घर भी पहुचेगी
बन्द तिजौरी की झकारे

प्रिय सुधिया नीरस जीवन मे
जेसे सूखी बन्दनबारे

सावधानी से उकेरो

एक निर्झर है हमारी जिन्दगी
गति निरन्तर है हमारी जिन्दगी

सावधानी से उकेरो देखना
संगमरमर है हमारी जिन्दगी

उम्र भर बुनते रहे हैं यत्न से
एक स्वेटर है हमारी जिन्दगी

थाह पा जाना कठिन है पार भी
अतल सागर है हमारी जिन्दगी

दूर तक हैं रेत पर लहरे तृषित
तप्त मरूधर है हमारी जिन्दगी

हम जिसे आकाश थे समझा किये
शून्य अम्बर है हमारी जिन्दगी

पास अपने हर जटिल से प्रश्न का
एक उत्तर है हमारी जिन्दगी

खण्डहर तो देखिये

आईना कोई सामने रख कर तो देखिये
कितना लगेगा आप को तब डर तो देखिये ?

जगमग इमारतो के झरोखो से झाक कर
क्या कह रहे हैं आप से खण्डहर तो देखिये ?

मिट्ठू का मीठा बोलना भाता सही मगर
पिजरे मे उस के टूटे पडे पर तो देखिये ?

चक्कर मे घूमते रहे मजिल की खोज मे
रस्ते मे कोई मील का पत्थर तो देखिये ?

माना कि भूख किस को है लगती नहीं यहा
पर भूख से उठकर कभी ऊपर तो देखिये ?

आखिर हुआ उजाला पहचाने गये लोग
लेकिन जला जो रात मेरा घर तो देखिये ?

मरी हसी का दर्द समझने के वास्ते
कान्धो पे अपने रख के मेरा सर तो देखये ?

लोग बौने हो गए

स्वप्न जब आखो मे चचल मृग के छौने हो गए
नींद के वे क्षण सुहाने अति सलौने हो गए

आज बूढे बाप ने कुछ सास ली है चैन की
चार बेटी थीं सभी के ब्याह गौने हो गए

गमजदा पहुचे जहा पर दर वही गमगीं हुआ
जिन्दगी के पत्र ज्यो हम फटे–कौने हो गए

किस तरह बहलाए और बच्चो का कैसे मन रखे
हर किसी बाजार मे महगे खिलौने हो गए

इस समय की धार मे कैसे बचेगी अस्मिता
छद्म की बहती नदी हम दीप–दौने हो गए

कल सुबह की फिक्र मे जो रात काटी जागते
बेकली की मौन लिपि सलवट बिछौने हो गए

कौन जाने कौन से है कोण की यह रौशनी
बढ गईं परछाईया और लोग बौने हो गए

सवालो की जिन्दगी

कब तक निभाए साथ खयालो की जिन्दगी
मुह बाए जब खडी हो सवालो की जिन्दगी

जूझे हलो कलो से थके चूर हो गए
गौरवमयी है कितनी निढालो की जिन्दगी

अखबार पढ कसैला हुआ मन सुबह सुबह
मण्डी के देख भाव उछालो की जिन्दगी

मसनद के सहारो से टिके लोग क्या जाने
यायावरो के पैर मे छालो की जिन्दगी

भगवान कूच कर गया चुपचाप वहा स
नजदीक से देखी जो शिवालो की जिन्दगी

क्यो मछलिया पानी मे भी दम तोड रही हैं
जहरीली कब से हो गई जालो की जिन्दगी

कश्ती मे जो सवार है वे तैरना सीखे
मैया डिबो न दे कहीं पालो की जिन्दगी

जिसे गजल मे जिए

एक दिन तख्ती पर लिक्खा था हम ने प्यारा प्यारा नाम
अब आसू की स्याही से लिखते हैं खारा खरा नाम

जीते हैं गुमनाम जिन्दगी आज कभी उन लोगो का
किस को है मालूम कि धधका अगारा अगारा नाम

जीवन भर थे रहे दौडते जिस के पीछे अब उस के
उखडे अक्षर तितर बितर हैं बैठा हारा हारा नाम

मेरी रही भूमिका कैसी इस जिज्ञासा से बेचैन
पूछ फिरा है बस्ती बस्ती बजारा बजारा नाम

क्या कह कर आवाज लगाए कैसे उस को जान सके
सुबह को शबनम दिन को सूरज रात को तारा तारा नाम

उत्तरदायी तो होने थे हम निज कथनी करनी के
होता है बदनाम मगर यह बेचारा बेचारा नाम

पत्र विसर्जित किये मुक्ति के लिए सभी गगाजल मे
तट पर बैठा देख रहा क्यो फिर भी धारा धारा नाम

जिसे गजल मे जिये गीत मे मुक्तक और रूबाई मे
अखवारो की रद्दी मे फिरता है मारा मारा नाम

रौशनी के रग

देखे हैं जब करीब से इस जिन्दगी के रग
दीखे हजार और नये बन्दगी के रग

राधा की प्रीति मीरा के विश्वास की तरह
कितने चटक हैं आज भी दिल की लगी के रग

सारे जहा की खूबिया हाने के बाद भी
कच्चे है तितलियो की तरह आदमी के रग

बचपन मे खेल ख्वाब जवानी मे फिर भजन
बदले हैं बार बार यहा जिन्दगी के रग

गुलरग जिन्दगी को बना तो लिया मगर
ठहरेगे कितनी देर गुले–कागजी के रग

गगा का अवतरण हो अजन्ता हो ताज हो
नयनाभिराम कितने हैं ये तिश्नगी के रग

ऐसा हुआ उजाला कि आखे नहीं रही
कैसे बताए आप को अब रौशनी के रग

पख पाकर उड गए

जिन्दगी भर आईने मे क्या से क्या देखा किए
वक्त के सग सग चढा उतरा नशा देखा किए

वे न बाज आए जफा से और वफा से हम कभी
सिलसिला दर सिलसिला ये सिलसिला देखा किए

उन के दस्ताने रगे थे खून लेकिन शक्ल पर
बेगुनाहो की तरह का हौसला देखा किए

हम से गुस्ताखी हुई थी साफगोई की कभी
उस की ऐवज मे ही अपना घर जला देखा किए

आधिया उमडीं तशद्दुद की उजाडीं बस्तिया
और नाजिम लाग घर बैठे हवा देखा किए

एक डायन[1] और सारे शहर मे हडकम्प है
हम हमारी जहनियत का ये सिला देखा किए

जिन के चुग्गे के लिए नापा किए थे आसमा
पख पा कर उड गए हम घौंसला देखा किए

{1 कई राज्यो मे मई 1985 मे एक हवा फैलाई गई कि एक डायन पिशाचनी घर घर भीख माग रही है और जिस द्वार पर वह आती है उस घर मे पुत्र अथवा पति मृत्यु का अन्ष्ठि हो जाता है किन्तु जो लोग अपने द्वार पर हरी मेहदी के थापे लगा लेते हैं उन के यहा वह नहीं आती तथा वे किसी अशुभ से बच जाते हैं। मैने जयपुर मे बडे बडे बुद्धिजीवियो प्रोफेसरो वकीलों आदि के बगलो के द्वारा पर मेहदी के लगे थापो को देखा)

गौर करो

जब किसी बात पर भी गौर करो
पहले हालात पर भी गौर करो

जिन्दगी की हसीन दुनिया मे
तल्ख लम्हात पर भी गौर करो

आख बरसा रही है जो आसू
ऐसी बरसात पर भी गौर करो

मोत जिन के दिलो की हसरत है
उन के जज्बात पर भी गौर करो

शब को तन्हाई दिन को फिक्र–ए मुआश
ऐसे दिन रात पर भी गौर करा

गर को शक से देखने वालो
अपने हालात पर भी गौर करो

तुम और इतना विकार–ए–इल्म मुकुट
अपनी औकात पर भी गौर करो

रेले मे भीड के

जो अपनी शख्सियत को कुचलने नहीं देते
वे रूह के सूरज को ढलने नहीं देते

मुफलिस के चरागो म कितना सा तेल है
पर लोग उन्हे भी तो जलने नही देते

तहजीब के मारे हुए मा बाप अमूमन
बच्चो को फिसलनी पे फिसलने नहीं देते

कुछ इस तरह दूकान जमाए हुए हैं लोग
औरो की अपने सामने चलने नही देते

बच्चे कभी न समझेगे मा बाप किसलिए
बच्चो को दुपहरी मे निकलने नहीं देते

पैरो को जमा रखिये रेले मे भीड के
इस मे गिरे हुए को सभलने नही देते

कुछ टिड्डियो के टोल है ऐसे भी बाग मे
कितना भी हरा पेड हो फलने नही देते

सोता रहा शहर यानी

बाद मुद्दत के जो लौटा हू अपने घर यानी
आज खुशियो के मेरी लग गए हैं पर यानी

सौंप कर आप ने मसला अदीब बहसो को
किया खुलूस से मुद्दे को दरगुजर यानी

जरा सी बात पर जिस ने जमीर बेच दिया
उसे जरा भी नहीं लगता कोई डर यानी

बडे करीने से जो कारवा लुटा होगा
साथ मे उस के रहा होगा राहबर यानी

आईने एक ने कल रात को दम तोड़ दिया
पी लिया उस ने भी चुपचाप क्या जहर यानी

एक मजलूम ने जालिम का गरेबा पकडा
उस की उम्मीद भी आयेगी अब तो बर यानी

कल पडौसी के यहा कत्ल हुआ जान गई
रात भर चैन से सोता रहा शहर यानी

तमाम उम्र उसूलो की जो दुहाई दी
दिया है आग में हम ने ही अपना सर यानी

गुबारो के साथ चल

चलना है साथ साथ तो तारो के साथ चल
हमदर्द है तो वक्त के मारो के साथ चल

फूलो से दिन तो बीत गए मुद्दते हुई
अब वक्त आ गया है कि खारो के साथ चल

तुझ को अगर है खौफ–ए–खुदा तब तो हो लिया
हारा हुआ है खेल तू हारो के साथ चल

शोहरत ही अगर चाहिये हर हाल मे तुझे
बैसाखिया उठाले सहारो के साथ चल

वे लोग वो खुलूस वो इन्सानियत कहा
जिन्दा अगर है रहना तो नारो के साथ चल

मजिल भी मिले साथ मे मकबूलियत मिले
रह कारवा के साथ गुबारो के साथ चल

ये मोज ये लहर ये भवर और ये नदी
तेरे लिए कहा है किनारो के साथ चल

दीये जलाकर देखिये

काच का एक घर बनाकर देखिये
उस मे फिर दीये जलाकर देखिये

आप को राहत मिलेगी खुद बखुद
अपन वाद का निभा कर देखिय

फर्क मुझ मे आप मे कुछ भी नही
आप मेरे पास आकर देखिये

मन बहुत भारी अगर होने लगे
दो घडी आसू बहाकर देखिये

रोशनी की रोशनी हो देखनी
आख से पर्दा उठाकर देखिये

दुश्मनी के रूप हो गर देखने
दोरता को आजमा कर देखिये

शून्य का यदि साक्ष्य करना हो तुम्हे
आखरी सीढी प जाकर देखिये

आदमी की तरह जीना हो अगर
स्वट को मडेला बनाकर देखिये

गोखरू ऐसा लगा

जब उदासी घनी हो मन प्राण पर छाने लगी
तब तुम्हारी छुअन पावन धैर्य बन्धवान लगी

कुछ अभावो की वजह से हम परेशा थे बहुत
और चिड़िया एक बैठी ठूठ पर गाने लगी

बास के वन मे उलझकर झुलस जाये ज्यो हिरन
जिन्दगी भी बास वन की तरह झुलसाने लगी

कोई तो जाकर बताए मछलियो को वक्त से
हर लहर इस ताल की है जाल फैलाने लगी

कल किसी के छले जाने का जो आया जिक्र तब
आप की आवाज क्यो नाहक ही भर्राने लगी

इक चिरौटा आईने से शाम तक लडता रहा
शक्ल उस की किस कदर थी उस को भरमाने लगी

जब से बेटी ने मेरी आखो को चूमा एक बार
तब से हर लडकी मुझे बेटी नजर आने लगी

कल मुझे भी मारने पर थे उतारु चन्द लोग
मैं गलत था या मेरी बोली कबीराने लगी

आज मेरे पाव मे एक गोखरु ऐसा लगा
एक मुद्दत बाद मा की याद तडपाने लगी

रहजनो की भीड

रहजनो की भीड हो जब रहबरी के वास्ते
तब कोई चारा नही लाचारगी के वास्ते

हम भी जी सकते है तन्हा आप की कुर्बत बगैर
शुक्रिया है आप का इस बेरुखी के वास्ते

चान्द तारे तोड कर कोई कभी कब ला सका
सब्र करना ही है बहतर आदमी के वास्ते

दिल की शम्माए बुझाकर इल्म की आतिश जला
रौशनी करने चले हम रौशनी के वास्ते

हम को रूसवा भी किया और साथ मे कहते रहे
ये शगल भी क्या बुरा है दिललगी के वास्ते

मसखरो के बीच मे घुटघुट के मरने के सिवा
और कुछ मुमकिन नही सजीदगी के वास्ते

ऐश–ओ–इश्रत की कमी तो थी नहीं कोई मगर
जिन्दगी ढूढा किये हम जिन्दगी के वास्ते

उम्र भर सूरज के चाबुक पीठ पर सहते रहे
कुछ गुलाबो की रहे टहनी हरी के वास्ते

घर जला कर के तमाशा देखने के बाद अब
रास्ता कोई निकालो बेहतरी के वास्ते

मै तो एक सफर हूँ

यह कैसा अस्तित्व जहा मै घर म भी बेघर हू
किन्तु वशजो के हित–रक्षण बना हुआ छप्पर हू

वीणा वाणी और तूलिका मे छैनी कविता मे
किस किस पिजरे बन्द रहू मैं मैं उन्मुक्त हुनर हू

मेरी तृषा त्रासदी को तुम कैसे कूत सकोगे
मैं मरीचिका जननी मरू मे जन्मी रेत लहर हू

मेरा क्या व्यक्तित्व सभी कुछ तुम पर ही निर्भर है
पूजो ता हू देव नही तो मे केवल पत्थर हू

मेरी भीड भरी सडको पर मौलिकता मत खोजो
मैं अनुकृति के सस्करण की झूठन भरा शहर हू

मुझ मे से कुछ जीवन अपने खेतो तक ले जाओ
इस रेतीली धरती पर मै बहती हुई नहर हू

मेरे नाम कहा पाओगे कोई मील का पत्थर
मुझ मे मजिल ढूढन वालो में तो एक सफर हू

दो घूट सब्र के

भरपूर जिन्दगी तो सदी से नहीं मिली
कोई खुशी हमे तो खुशी से नहीं मिली

नेकी ने बहुत ठोकरे बख्शी हमे मगर
नीयत कभी हमारी बदी से नहीं मिली

माचिस की तिलियो मे रखी आग से डरिये
ये आग इन्हे आग लगी से नहीं मिली

दुनिया की नैमतो का भला क्या शुमार हो
बहतर कोई भी चीज खुदी से नहीं मिली

थोडा सा इन्तजार अभी और कीजिए
खुशबू कभी किसी को कली से नहीं मिली

कोशिश ने दोस्तो की हसा तो दिया हमे
राहत तो कभी ऐसी हसी से नहीं मिली

दो घूट सब्र के जो पिये तब पता चला
यह तृप्ति कभी बहती नदी से नहीं मिली

मायूस कभी होना नहीं उस की जात से
क्या शे है जो दरबार–ए–नबी से नहीं मिली

जुगनू ही सही

जुगनू ही सही वक्त को कुछ रोशनी तो दी
तारीकियो म आस को कुछ जिन्दगी तो दी

सहरा के छलावा म भटकते रहे तो क्या
हम ने हमारी ख्वाहिशो को तिश्नगी तो दी

माना कि हर कदम पे मिली ठोकरे हम
लकिन हरएक चोट ने सजीदगी तो दी

एक घौसले ने उम्रभर बान्धे रखा तो क्या
उस घौसले न आप को पाबदगी तो दी

ख्वाबो को हम से लाख शिकायत रही मगर
आखो मे उन्हे हम ने बाशिन्दगी तो दी

हम ने हमारे कद के लिए कुछ न किया पर
इस दौर मे इखलाक को शायस्तगी तो दी

अच्छी लगी

आखो आखो मे हुई जो बन्दगी अच्छी लगी
उन की नजरो मे बसी पाकीजगी अच्छी लगी

वक्त जो बदला तो तन्हा हम को जीना आ गया
इस तरह हालात की लाचारगी अच्छी लगी

दोस्तो की दोस्ती ने इस कदर तोडा हमे
दुश्मनो की याद आई दुश्मनी अच्छी लगी

उस ने पीछे से मेरी आखे हथैली से ढकीं
चौंक उटठा मैं मगर यह दिललगी अच्छी लगी

आड कर घूघट की उस ने दिल की सब बाते कहीं
इस तरह पर्दे छिपी बेपर्दगी अच्छी लगी

अब न देखेगा मेरी वह शक्ल कह कर चल दिया
शाम को फिर आ गया यह सादगी अच्छी लगी

यू तो सारा शहर रौशन था दिवाली पर मगर
हम को मुफलिस के दिये की रौशनी अच्छी लगी

रौशनी ढूढा किये

हम बुझा रिश्तो मे जज्बा आतिशी ढूढा किये
किस कदर मायूस थे लेकिन खुशी ढूढा किये

यू तो भारी भीड थी अपनो की अपने पास पर
दोस्तो के बीच मे हम दोस्ती ढूढा किये

वो तो अपनी फितरतो पर खरे उतरे और हम
रहजनो की नीयतो मे रहबरी ढूढा किये

दोस्तो की गमगुसारी उम्र भर थी की मगर
अपनी कहलेने को हम इक अजनबी ढूढा किये

हर इबादतगाह मे जब फूल मुर्झाने लगे
कागजी फूलो मे तब हम ताजगी ढूढा किये

जाम तो लबरेज रक्खा था हमारे सामने
हम खडे सहरा मे अपनी तिश्नगी ढूढा किये

अब हमारी बेखुदी मे और क्या बाकी रहा
हाथ में लेकर दिये हम रौशनी ढूढा किये

मुतमइन थे किस कदर हम भी खुदा की जात से
हादसा गुजरा कोई तो बहतरी ढूढा किये

इम्तिहा कैसे कैसे

लिए वक्त ने इम्तिहा कैसे कैसे
कि छोडे जिगर पर निशा कैसे कैसे

कभी फिक्र कोई कभी गम किसी का
गई जिन्दगी रायगा कैसे कैसे

बुझा है कभी जब चराग–ए–मुहब्बत
घुमडता है दिल मे धुआ कैसे कैसे

कभी राम गौतम कभी कृष्ण गान्धी
जमीं पर हुए आस्मा कैसे कैसे

न रिश्ता है कोई न नाता किसी से
शहर म हैं खण्डहर मका कैसे कैसे

बहुत पाक इफ्तार की दावतो मे
सियासत बनी है समा कैसे कैसे

हमी आसमा आफताब ओ कमर हैं
हुए जिन्दगी मे गुमा कैसे कैसे

कृष्ण की बासुरी

दर्द को ही दवा बनाएगे
दर्द गीतो मे ढाल गाएगे

वो तो फिर भी महक से भर देगा
आप चन्दन को गर जलाएगे

कौन सीता के अज्म तक पहुचे
ऐसे कितने जमीं समाएगे

जिन्दगी तब समझ मे आएगी
जब सलीब अपनी खुद उठाएगे

बहर–ए–उल्फत की थाह कितनी है
पूछने राधिका से जाऐगे

आख अपनी अगर न खुल पाई
सूर के पद ही गुनगुनाएगे

कोई पूछे कि नाज किस पर है
कृष्ण की बासुरी बताएगे

जेसे कोई शायर भटके

हम ऐसे प्यासे तरसे है तालाबो की बस्ती मे
जैसे काई शायर भटके है ख्वाबो की बस्ती मे

एक वही था जिसे फिक्र थी जब वह पागल नही रहा
कोन खबर देगा पहल से सैलाबो की बस्ती मे

जाने क्यो होता है ऐसा और ये अक्सर होता है
हम खुद को तन्हा पाते हैं अहबाबो की बस्ती मे

हम ही गजल रूबाई हम ही हम ही दोहे चौपाई
हम ही तार सितार हुए हैं मिजराबो की बस्ती मे

कितना भी कद आप निकाले लेकिन इतना ध्यान रहे
सर को नीचा करके चलना महराबो की बस्ती में

हयात की खुशबू

भीनी भीनी हयात की खुशबू
जैसे दिलकश कतात की खुशबू

उन के होठो से फूल झरते हैं
उन की बोली मे बात की खुशबू

भूखे बच्चो से पूछिये जाकर
कितनी सौंधी है भात की खुशबू

जीत का रास्ता दिखाती है
हार जाने पे मात की खुशबू

जिस ने पिंजरे मे दिन गुजारे हो
उस से पूछो नजात की खुशबू

आफताब आ गया है आगन मे
छोड़िये अब तो रात की खुशबू

दुनियादारी

ये कैसी दुनियादारी है
मक्कारी ही मक्कारी है

चोर चोर मौंसेरे भाई
जिन पर जनमत बलिहारी है

ये हम कैसे रिश्ते जीते
वहशत ही वहशत तारी है

जिस की लाठी भैंस उसी की
निर्बल की क्या हकदारी है

कमजर्फो से तर्क की बाते
खिरदमन्द की मत मारी है

हम सब दुहरा जीवन जीते
यह भी कैसी लाचारी है

बडी फूक मे भरा हुआ है
शायद कोई अधिकारी है

अब जज्बाती रिश्ते सपने
साठ गाठ की ही यारी है

मा के अचरा दूध है लेकिन
आखो मे आसू खारी है

शब्दो का सामर्थ्य न पूछो
जग निरन्तर ही जारी है

इस धुए मे

इस धुए मे तो चमन की तितलिया मर जाएगी
बुलबुले मर जाएगी मधुमक्खिया मर जाएगी

ठीक है दुनिया कुचल कर आप रख सकते सही
पर सभल कर पैर रखना चीटिया मर जाएगी

इस तरह से रौदिये मत लहलहाते खेत को
बाद मे पछताओगे जब बालिया मर जाएगी

हाथ गर अपनो के तुम ने काट ही डाले तो फिर
रात दिन स्वागत मे बजती तालिया मर जाएगी

जिस तरह से पल रहे हैं मगर इस तालाब मे
कुछ समय के बाद सारी मछलिया मर जाएगी

रिश्ते नाते छोड कर के आप जी सकते तो हैं
क्या रहेगा आप मे गर हिचकिया मर जाएगी

बेटियो को बेवजह ही रात दिन मत कोसिये
जिन्दगी मिट जाएगी गर बेटिया मर जाएगी

जाल कितने भी बुने लेकिन हमे मालूम है
अपने जालो मे उलझ कर मकडिया मर जाएगी

फास्ट फूड

चहुदिश खींचातानी है
देख मुझे हैरानी है
आख कान मुह बन्द रखो
इस मे ही आसानी है
अनुशासन की परिभाषा
अब केवल मनमानी है
भ्रष्टाचारी सस्कृति मे
सारी बात ज़ुबानी है
इस युग मे नैतिक रहना
एक बडी नादानी है
सीखे किस को देते हो
उस की भरी जवानी है
फास्ट फूड के सपने छोड
तुझ को तो गुडधानी है
झूठी कसमे खाता है
ये कैसा रमजानी है
वह ही उतना मौन रहा
जितना जिस मे पानी है
उस की आखो नीद नहीं
शायद बिटिया स्यानी है
रब का सच ही सच्चा है
बाकी सब बेमानी है

पहचान

तुम ने जब जब दीन की ईमान की बाते करी
हम ने तब तब जायसी रसखान की बाते करी

तुम फकत पोशाक को लेकर बहस करते रहे
और हम ने कौम की पहचान की बाते करीं

अपनी खुदगर्जी से बाज आये सियासत या नहीं
हिन्द के बेटो ने हिन्दुस्तान की बाते करीं

हम ने सासो मे बसा रक्खा है उस तहजीब को
जिस ने हर पल राम की रहमान की बाते करीं

मैं गया था गाव अपने पूछने मजहब का राज
पर वहा हर शख्स ने खलिहान की बाते करीं

तुम झगडते ही रहे बेवजह गत इतिहास पर
हम ने कल के वास्ते विज्ञान की बाते करीं

पूर्णिमा गगा नहाता है इनामुलहक यहा
और गगाराम ने कुरआन की बाते करीं

इन्द्रधनुषी ही रहा आया हमारा नजरिया
करने वालो ने बहुत व्यवधान की बाते करीं

किस मे ताकत है डिगा दे जो हमारी आस्था
हम ने हर इन्सान के सम्मान की बाते करीं

हालात सवरने दो

{श्रीमती इन्दिरा गान्धी की हत्या के समाचार से जन्मी गजल}

ये दौर–ए–परेशानी धीरज से गुजरने दो
और वक्त के हाथो ही हालात सवरने दो

गुमराह हवाओ ने एक शम्मा बुझा दी तो
हम दीप जला लग तूफान ठहरने दो

फूलो का अगर झरना लाजिम है जो गुलशन म
डाली से नहीं फिर भी होठो ही से झरने दो

कमजर्फ निगाही की खुदगर्ज फिजाओ मे
गेरत जो बची है ता इखलाक न मरने दा

साहिल के तमाशाई डूबा न हम समझे
साहिल पे हमी होगे भवरो से उबरने दो

नफरत के तलातुम मे हम डूब नहीं जाए
इस वास्ते जज्बाती रिश्ते न विखरने दो

हम अम्न का पर्चम ही लेकर के फिर चलेगे
है घाव दगा के कुछ ये जख्म तो भरने दो

सुनते है बरसता है एक नूर पहर आठो
अब चान्दनी रातो को हर छत पे उतरने दो

दीखेगा नहीं तुम को प्रतिबिम्ब अभी अपना
इस आईने का पानी कुछ और निथरने दो

जुगनू लिए

मुट्ठियो मे बन्द कुछ जुगनू लिए
हम स्वय को सूर्य थे समझा किए

यदि खुला आकाश चाहो देखना
खिडकिया कमरे की अपने खोलिए

अब बडे शहरो मे हैं रहने लगे
सभ्य कितने हो गए हैं भेडिये

जिन मे हो लबरेज औरो का लहू
रात भर जलते कहा ऐसे दिये

हाथ में लाठी थी उन के, जुर्म सब
मढ दिये माथे हमारे अन किये

जिन के होने से न होना हो भला
अब तो ऐसे सिलसिलो को तोड़िये

जिन्दगी मे कामियाबी के लिए
झूठ को सच की तरह से बोलिये

शेर दुहराते रहे

हादसे को देखने वाले बहुत आते रहे
पर तडपते शख्स को छूने से कतराते रहे

जिन के कारण लोग हसते हैं हमारे हाल पर
सब्र करने के लिए वो हम को समझाते रहे

दस्त–ए–गुलचीं ने हमेशा जुल्म ही ढाये मगर
ये गुलो का ही जिगर था फिर भी मुस्काते रहे

जिन के कन्धे छीलकर के लोग कद्दावर बने
अहमियत कद की उन्हीं लोगो को बतलाते रहे

जिन्दगी तो हम सभी को एक सी बख्शी गई
कुछ सलीके से जिये और कुछ थे इतराते रहे

एक ही झौंका हवा का हम को ये समझा गया
नाव कागज की थी अपनी जिस को तैराते रहे

मैंने जो देखा जहा में कह दिया था और बस
मुद्दतों फिर लोग मेरे शेर दुहराते रहे

सपन देख रहे है

हम वक्त के माथे पे शिकन देख रहे है
इस दौर के पावो की थकन देख रहे है

शायद हकीकतो के कसैले मिजाज से
चश्मे हरे लगा के सपन देख रहे है

माना कि है आजाद चमन मे ये परिन्दे
चुप्पी मे इन की एक घुटन देख रहे हैं

कितने हैं खुशनसीब वे मा बाप जहा मे
जो वक्त से बेटी को दुल्हन देख रहे है

कोई कमी हमारी रही होगी वगरना
फूलो मे क्यो काटो की चुभन देख रहे है

मचो पे चढे लोगो के बारे मे क्या कहे
करनी तो देख ली है कथन देख रहे है

रातो के अन्धकार मे हम अपने दिये की
लौ मे छिपे सूरज की किरन देख रहे है

कोई तो बात होगी मीरा मे

रास्ते की नही खबर यारो
य सफर तो नहीं सफर यारो

खिडकिया बन्द बन्द दरवाजे
ये मका तो नही है घर यारो

दाग दिल के किसे दिखाते हो
हर किसी पर नही नजर यारो

हम को हम ही कही न मिल पाए
छान मारा है हर शहर यारो

कोई तो बात होगी मीरा मे
कौन पीता है यू जहर यारो

आदमी सिर्फ इतना बदला है
अब खुदा का नही है डर यारो

वक्त हर वक्त हम को ठगता है
रात दिन शाम और सहर यारो

घर से बिछडे तो घर समझ आया
घर से कितने थे बेखबर यारो

आस्मा कितना खूबसूरत है
तोल कर देखियेगा पर यारो

नाम ठहरेगा नही

रात भर तो बडबडाए खूब सो जाने के बाद
मूक लेकिन हो गए हैं दिन निकल आने के बाद

हो सके तो आदमी के ह्रदय पर अकित करो
नाम ठहरेगा नहीं पत्थर पे खुदवाने के बाद

एक ऐसी बेल भी फैली हुई है बाग मे
खून पी जाती है जो पेडो पे छा जाने के बाद

कास मे जाकर छिपा है प्रताडित खरगोश जो
सास लेने मे भी है भयभीत घबराने के बाद

दिवा–स्वपनी कुन्तलो की छाह मे मत नींद लो
आग मे दहना पडेगा खुद को झुठलाने के बाद

जल्दबाजी मे न काटो इन गुलाबो की जडे
फूल को तरसा करोगे जिन्स मिटजाने के बाद

तीलिया हैं बन्द माचिस मे इन्हे छेडो नहीं
आग हो जाती है ये किंचित भी टकराने के बाद

ए चमन वालो हमारी गन्ध का आनन्द लो
एक दिन झर जायेगे ये फूल मुर्झाने के बाद

{ आपातकाल के हालात मे जन्मी गजल }

आप हें परफ्यूम मे डूबे हुए

दूर जितनी दूर जाती है नजर
धुन्ध ही बस धुध आती है नजर

है कहा मजिल नहीं मालूम पर
जानते हैं कट रहा है इक सफर

और कब तक लडखडाने से बचे
बोझ से दुहरी हुई जाती कमर

बन गए हैं लोग रातो रात मे
काश हम को भी वही आता हुनर

छेद तल मे हो गया जलपोत के
डेक पर बठे हैं हम सब बेखबर

हो सके तो दश से बचते रहो
आदमी का है बहुत घातक जहर

यू तो आलीशान बगलो मे रहे
एक घर को फिर भी तरसे उम्र भर

आप हैं परफ्यूम मे डूबे हुए
हम पसीने मे हुए हैं तरबतर

आज जो हैं ध्वज लिए प्राचीर पर
चढ गए कन्धे हमारे छीलकर